UNIVERSAL LIBRARY

OU_178995

UNIVERSAL LIBRARY

जर्मन लोक कथायें

ी बात है कि दो भाई कभी अलग
। याकोब ग्रिम का जन्म १७८५ में
का जन्म १७८६ में हुआ था।
र्ण जीवन अभिरुचियों सुखद
ात किया। शैशव
ाविद्यालय में
रंपक्व अध्ययना
साथ-साथ क
: के बराबर में

न्होंने जर्मन लो
ा, जिनका प्रथम
ासल पुस्तकालय
भाई १८३० में
सफलता का
ग्रों, ऐतिहासिक
न अध्ययन कि
ं किया और पु
किंतु १८३७ में
जा द्वारा संविधा
ात्र पर हस्ताक्षर
तः उन्हें प्राध्याप
से निर्वासित
। १८४१ में वे
यापक का कार्य
के सदस्य निर्वाचित कर लिये गए।
अध्यापन करते थे। किंतु उन्होंने
षा के बृहत् कोश के लिये अनवरत
प्रथम बार इसकी योजना बनने
इतना विशाल था कि दोनों भाइयों

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83·1 R21 ग्रि

Accession No. G H 3126

Author राइ. हाइमो (सम्पादक)

Title ग्रिम बन्धु-जर्मन लोक कथाएँ

This book should be returned on or before the date last marked below.

मूल जर्मन से शिवशरण दीक्षित द्वारा अनूदित
चित्रकर्त्री – हैर्टा राउ

प्रकाशक : मक्स म्युल्लर भवन
जर्मन संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली
सम्पादक : हाइमो राउ
मुद्रक : लखेरवाल प्रेस, नई दिल्ली-५

ग्रिम बन्धु

जर्मन लोक कथायें

श्रीमती हॉल

एक विधवा के दो कन्याएँ थीं। उनमें से एक सुन्दर और मेहनती थी, दूसरी कुरूप और आलसी थी। किन्तु विधवा कुरूप और आलसी को ज्यादा चाहती थी, क्योंकि वह उसकी सगी लड़की थी, और सारा काम दूसरी को करना पड़ता। बेचारी लड़की को प्रतिदिन बड़ी सड़क पर कुएँ के किनारे बैठकर इतना अधिक सूत कातना पड़ता कि उसकी उँगलियों से ख़ून निकलने लगता। अब एक बार ऐसा संयोग हुआ कि तकला ख़ून में बिल्कुल सन गया। सो वह उसे लेकर कुएँ में झुकी और उसने उसे धोना चाहा, किन्तु वह उसके हाथ से छूटकर गिर गया।

वह रोने लगी और सौतेली माँ के पास भागी गई और उसने उसको इस दुर्घटना का हाल बताया। किन्तु वह तो उसे ज़ोर ज़ोर से गालियाँ देने लगी और बड़ी बेरहमी से बोली, "जब तूने तकला गिराया है तो तू ही उसे निकाल कर भी ला।"

वह लड़की वापिस कुएँ पर गई। उसे सूझता न था कि

वह क्या करे। अपनी मानसिक व्यथा में वह तकला निकालने के लिये कुएँ में कूद पड़ी। वहाँ वह बेहोश हो गई, और जब उसे होश आया और वह दुबारा भली प्रकार समझने-बूझने लगी तो उसने अपने को एक सुन्दर मैदान में पाया, जहाँ सूर्य चमक रहा था और हज़ारों फूल खिल रहे थे।

इस मैदान में वह आगे चली और एक भट्टी के पास पहुँची, जो रोटियों से भरी हुई थी। रोटी ने कहा, "आह, मुझे निकाल ले, मुझे निकाल ले, नहीं तो मैं जल जाऊँगी; मैं बहुत पहले ही पक चुकी हूँ।" इस पर उसने वहाँ जाकर आँकड़ी से एक-एक कर सब रोटियाँ निकाल लीं।

इसके बाद वह आगे बढ़ी और सेबों से लदे वृक्ष के पास पहुँची। वृक्ष ने कहा, "आह, मुझे हिला दे, मुझे हिला दे, मेरे सब सेब पक चुके हैं।" इस पर उसने पेड़ हिलाया, जिससे सेब गिरने लगे, मानो वे बरस रहे हों। और वह हिलाती ही रही जब तक कि उस पर एक भी सेब बाक़ी नहीं रहा। जब उसने सब का एक ढेर लगा दिया तो वह आगे चली।

अन्त में वह एक छोटे-से मकान पर आई। उसमें से एक बूढ़ी स्त्री झाँक रही थी। उसके बड़े-बड़े दाँत देखकर वह डर गई और उसने वहाँ से भाग जाना चाहा। किन्तु बूढ़ी स्त्री ने उसे पुकारा, "प्यारी बेटी, तू क्यों डर रही है? मेरे पास रह और

यदि तू सब काम करेगी तो तू सुख से रहेगी। तुझे केवल यह ध्यान रखना होगा कि तू मेरा बिस्तर अच्छी तरह से बिछाए और उसे महनत से झाड़े, जिससे कि पर उड़ने लगें। उन परों से संसार में बर्फ़ गिरती है; मैं हूँ श्रीमती हॉल।" बूढ़ी महिला ने बड़ी भलमनसाहत से उसकी हिम्मत बढ़ाई थी, सो वह राज़ी हो गई और उनकी नौकरी में लग गई।

वह सब बातों का उनकी इच्छानुसार ध्यान रखती और सदा उनका बिस्तर ज़ोर से झाड़ती, जिससे पर बर्फ़ की परतों के समान इधर-उधर उड़ते। इसके बदले में उनके यहाँ उसका जीवन भी सुखमय था--कोई क्रोध भरा शब्द नहीं और प्रतिदिन उबला और भुना हुआ भोजन।

वह कुछ समय श्रीमती हॉल के पास रही। वहाँ वह उदास हो-हो जाती और शुरू में स्वयं उसकी समझ में नहीं आया कि उसे क्या हो गया है। अंत में उसे ध्यान आया कि यह घर का मोह है, यद्यपि यहाँ उसका जीवन घर की अपेक्षा सहस्रों गुना सुखमय था। अन्त में उसने बूढ़ी महिला से कहा, "मुझे घर की याद सताती है, और यद्यपि यहाँ नीचे मैं इतने आराम से हूँ, तो भी मैं यहाँ और अधिक नहीं रह सकती। मुझे ऊपर अपने घर-वालों के पास जाना चाहिये।"

 श्रीमती हॉल बोलीं, "मुझे प्रसन्नता है कि तू फिर घर जाना

चाहती है। तूने पूरी सच्चाई से मेरी सेवा की है, इसलिए मैं स्वयं तुझे ऊपर ले चलती हूँ।"

इसके बाद उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक बड़े फाटक के सामने ले गई। फाटक खोला गया, और ज्यों ही वह लड़की उसके ठीक नीचे खड़ी हुई, सोने की एक ज़ोर की वर्षा हुई और सुनहरी झालरों से वह ऊपर से नीचे तक ढक गई। श्रीमती हॉल ने कहा, "यह तू रख ले, क्योंकि तू मेहनत से काम करती रही है।" उन्होंने उसे वह तकला भी दे दिया जो उससे कुएँ में गिर गया था। इसके बाद द्वार बन्द हो गया और लड़की ने अपने को ऊपर संसार में अपनी माँ के घर के निकट पाया। और जब वह आँगन में आई, तो कुएँ पर बैठा मुर्ग़ा बोला :

कुकड़ूँ कूँ आ रही इधर,
स्वर्ण कुमारी अपने घर।

तब वह भीतर अपनी माँ के पास गई। वह सोने से ढकी हुई पहुँची थी। उसे ऐसा देखकर उसकी माँ व बहन ने उसका अच्छी तरह स्वागत किया।

लड़की ने सब कुछ, जो उसके साथ बीता था, कह सुनाया, और जब माँ ने सुना कि किस प्रकार उसने यह बड़ी सम्पत्ति पाई तो उसने दूसरी कुरूप और आलसी लड़की का भाग्य भी
 वैसा चमकाना चाहा। उसे कुएँ के किनारे बैठकर कातना

पड़ा श्रौर तकले को ख़ून में सानने के लिये उसने श्रपनी उँगली छेद ली श्रौर श्रपना हाथ काँटे की झाड़ी में घुसेड़ दिया। इसके बाद उसने तकला कुएँ में फेंक दिया श्रौर स्वयं उसके भीतर कूद गई।

यह दूसरी लड़की के समान उसी सुन्दर मैदान में श्राई श्रौर उसी मार्ग पर चली। जब वह भट्टी के पास पहुँची तो रोटी दुबारा चिल्लाई, "श्राह, मुझे निकाल ले, मुझे निकाल ले, नहीं तो मैं जल जाऊँगी; मैं बहुत पहले ही पक चुकी हूँ।" "मुझे ग़रज पड़ी है न, कि श्रपने को गंदी बना लूँ!" कहकर श्रालसी लड़की श्रागे चल दी। शीघ्र ही वह सेब के वृक्ष के पास पहुँची। वह चिल्लाया, "श्राह, मुझे हिला दे, मुझे हिला दे, मेरे सब सेब पक चुके हैं।" उसने उत्तर दिया, "तूने भली बात कही, कोई मेरे सिर पर भी तो गिर सकता है!" यह कहती हुई वह श्रागे चल दी।

जब वह श्रीमती हॉल के घर पहुँची तो वह डरी नहीं, क्योंकि उसने उनके बड़े बड़े दाँतों के विषय में पहले ही सुन रखा था, श्रौर तुरन्त उनके पास नौकर हो गई।

पहले दिन तो वह बड़े ज़ोर शोर से काम में जुट गई। वह बराबर मेहनत करती रही श्रौर जब श्रीमती हॉल उससे कुछ कहतीं तो वह उसका पालन करती, क्योंकि उसे उस बहुत सारे सोने का ध्यान रहता, जो वे उसे भेंट करेंगी।

किन्तु दूसरे दिन उसने कुछ सुस्ती से काम किया और तीसरे दिन उससे भी अधिक सुस्ती से; वह सुबह बिल्कुल भी उठना नहीं चाहती थी। उसने श्रीमती हॉल का बिस्तर भी उस तरह नहीं बिछाया, जैसा कि बिछाना चाहिये था, और उसे झाड़ा भी नहीं, जिससे कि पर उड़ते। श्रीमती हॉल इससे शीघ्र ही उकता गई। उन्होंने उसे नौकरी से जवाब दे दिया। सुस्त लड़की इससे निश्चय ही प्रसन्न हुई और उसे लगा कि अब सोने की वर्षा होगी। श्रीमती हॉल उसे भी फाटक पर ले गई, किन्तु ज्यों ही वह उसके नीचे खड़ी हुई तो सोने के स्थान पर तारकोल से भरा एक बड़ा डेगचा उसके उपर उलट गया। श्रीमती हॉल ने "यह तेरे काम का इनाम है", कहते हुए द्वार बन्द कर लिया।

इसके बाद आलसी लड़की घर आई, किन्तु वह पूरी तरह तारकोल से नहाई हुई थी। और जब कुएँ पर बैठे मुर्ग़े ने उसे देखा तो वह बोल उठा :

कुकड़ूँ कूँ आ रही इधर,
सड़ी कुमारी अपने घर।

तारकोल उसके पक्की तरह लगा रहा और जब तक वह जीवित रही, वह छूटा नहीं।

हिमशुभ्रा

भरे जाड़े के दिन थे और बर्फ़ की परतें परों के समान आकाश से गिर रही थीं। तभी एक रानी काली आबनूस की चौखट वाली खिड़की पर बैठी सिलाई कर रही थी। जब वह इस प्रकार सिलाई करते हुए बर्फ़ की ओर देख रही थी तो उसकी उँगली में सुई घुस गई और ख़ून की तीन बूँदें बर्फ़ पर गिर पड़ीं। लाल रंग सफ़ेद बर्फ़ में बहुत सुन्दर दिखाई दे रहा था। सो उसके मन में आया, "काश मेरे एक संतान होती, बर्फ़ के समान सफ़ेद, रक्त के समान लाल और आबनूस की लकड़ी के समान काले बालों वाली।" इसके बाद जल्दी ही उसके एक कन्या उत्पन्न हुई जो बर्फ़ के समान सफ़ेद, रक्त के समान लाल और आबनूस की लकड़ी के समान काले बालों वाली थी। इस कारण उसका नाम हिमशुभ्रा (बर्फ़ के समान सफ़ेद) रखा गया। उसके पैदा होते ही रानी की मृत्यु हो गई।

एक वर्ष के बाद राजा ने एक दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया। वह सुन्दर तो थी, किन्तु थी अहंकारिणी और उद्दंड, और वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि सुन्दरता में कोई

उससे बढ़ जाए। उसके पास एक अनोखा शीशा था। जब वह उसके सामने जाती और उसमें स्वयं को देखती, तो कहती :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

दर्पण उत्तर देता :

"हे रानी, हैं आप देश में सबसे सुन्दर।"

इस पर वह बहुत प्रसन्न होती, क्योंकि वह जानती थी कि दर्पण सत्य बोल रहा है।

उधर हिमशुभ्रा बड़ी होने लगी और उसकी सुन्दरता भी बढ़ने लगी। जब वह सात वर्ष की हुई, तो वह निर्मल दिन के समान मनोहर और रानी से भी अधिक सुन्दर थी। एक बार रानी ने अपने दर्पण से पूछा :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

उसने उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं यहाँ आप ही सबसे सुन्दर,
हिमशुभ्रा है किंतु आपसे भी सुन्दरतर।"

इस पर रानी को गहरा धक्का लगा और ईर्ष्या व क्रोध से वह लाल-पीली हो गई। उस घड़ी से वह उस कन्या से घृणा करने लगी। ईर्ष्या व अहंकार उसके हृदय में खार-पात के समान दिन-पर-दिन बढ़ने लगे, जिससे उसे रात-दिन चैन नहीं पड़ता था। अतः उसने एक शिकारी को बुलाया और कहा, "लड़की को जंगल में ले जाओ, मैं इसे अपनी आँखों के सामने नहीं देखना चाहती। तुम्हें इसे मार डालना होगा और निशानी के लिये मुझे इसके फेफड़े और जिगर लाकर देने होंगे।" शिकारी आज्ञानुसार उसे वन में ले गया। वहां जब उसने शिकारी चाक़ू निकाला और उसे हिमशुभ्रा के निर्दोष हृदय में भोंकना चाहा, तो वह रोने लगी और बोली, "ओह, प्यारे शिकारी, मुझे जीवित रहने दो। मैं घने वन में भाग जाऊँगी और फिर कभी घर नहीं आऊँगी।" उसके बहुत सुन्दर होने के कारण शिकारी को भी दया आ गई और वह बोला, "अभागी लड़की, तो भाग जा।" उसने मन में कहा, 'जंगली जानवर तुझे शीघ्र ही खा डालेंगे।' तो भी उसे लगा मानो उसके हृदय से एक पत्थर हट गया हो, क्योंकि उसे हिमशुभ्रा को मारने की आवश्यकता नहीं थी, और जब उसी समय एक जंगली सुअर का बच्चा उधर कूदता हुआ आया तो उसने उसके चाक़ू भोंक दिया और उसके फेफड़े व जिगर निकाल कर रानी के पास ले गया। रसोइये को उन्हें नमक डालकर पकाना पड़ा और दुष्ट स्त्री ने उन्हें खाया और समझा कि उसने हिमशुभ्रा के फेफड़े और जिगर खा लिये हैं।

उधर वह अभागी लड़की घने वन के सूनेपन में बिल्कुल अकेली रह गई थी और उसे सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे। उसने दौड़ना शुरू किया और वह नुकीले पत्थरों के ऊपर व काँटों के बीच दौड़ने लगी। जंगली जानवर छलाँगें मारते उसके सामने से निकल जाते, किंतु उसे कुछ न कहते थे। जब तक उसकी टाँगों ने काम दिया, वह दौड़ती रही। इतने में शाम हो चली। तभी उसे एक छोटा-सा घर दिखाई दिया और वह उसमें आराम करने चली गई। घर में सभी वस्तुएँ छोटी-छोटी थीं, किंतु इतनी शोभनीय और स्वच्छ कि कुछ कहा नहीं जा सकता। वहाँ सफ़ेद वस्त्र से ढकी हुई एक नन्ही-सी मेज़ बिछी थी जिस पर सात छोटी प्लेटें रखी थीं। प्रत्येक प्लेट के साथ एक छोटा-सा चम्मच, इसके अतिरिक्त सात नन्ही छुरियाँ, सात नन्हे काँटे और सात नन्हे प्याले। दीवार के पास सात छोटे पलंग बराबर-बराबर बिछे हुए थे और उनके ऊपर बर्फ़ जैसी सफ़ेद चादरें बिछी थीं। बहुत भूखी-प्यासी होने के कारण हिमशुभ्रा ने हर छोटी प्लेट से थोड़ी सब्ज़ी और रोटी खाई और हर प्याले से एक-एक बूँद शराब पी, क्योंकि वह अकेले एक व्यक्ति का सब कुछ नहीं लेना चाहती थी। इसके बाद बहुत थकी होने के कारण वह एक-एक करके उन पलंगों पर लेटी, किन्तु कोई भी उपयुक्त नहीं था। एक बहुत लम्बा था, दूसरा बहुत छोटा था, अन्त में सातवाँ सही निकला। उस पर वह लेट गई और भगवान का स्मरण करके सो गई।

जब बिल्कुल अँधेरा हो गया तो घर के मालिक आए। वे सात बौने थे जो पहाड़ों में कच्ची धातु के लिये कटाई व खुदाई करते थे। उन्होंने सात छोटे-छोटे दीपक जलाए और तब ज्यों ही घर में प्रकाश हुआ, उन्होंने लक्ष्य किया कि कोई भीतर आया है, क्योंकि सब कुछ उसी तरह क्रम में नहीं था, जैसा कि वे छोड़ गए थे। पहला बोला, "मेरी नन्ही कुर्सी पर कौन बैठा है?" दूसरा, "मेरी नन्ही प्लेट से किसने खाया है?" तीसरा, "मेरी नन्ही रोटी में से किसने खाया है?" चौथा, "मेरी सब्ज़ी में से किसने खाया है?" पाँचवाँ, "मेरे नन्हे काँटे से किसने छेदा है?" छठा, "मेरी छोटी छुरी से किसने काटा है?" सातवाँ, "मेरे नन्हे प्याले में से किसने पिया है?" तब पहले ने घूमकर देखा और पाया कि उसके बिस्तर पर एक छोटी-सी सिलवट पड़ी हुई है। उसने कहा, "मेरे छोटे पलंग पर किसने पैर रखा है?" दूसरे भी दौड़ते हुए आए और कहने लगे, "मेरे पलंग पर भी कोई लेटा है।" किन्तु जब सातवे ने अपने पलंग की ओर देखा, तो उसने उस पर पड़ी सो रही हिमशुभ्रा को पाया। यह देखकर उसने दूसरों को बुलाया, जो दौड़ते हुए आए और आश्चर्य से चिल्ला उठे। वे अपने सात नन्हे दीपक उठा लाए और उन्होंने हिमशुभ्रा पर प्रकाश डाला। "हे मेरे भगवान! हे मेरे भगवान!" वे कह उठे, "कितनी सुन्दर बच्ची है यह!" और उन्हें इतनी प्रसन्नता हुई कि उन्होंने उसे जगाया नहीं, बल्कि पलंग पर सोते रहने दिया। और

सातवाँ बौना अपने साथियों में से हरेक के पास एक-एक घंटा सोया। इस प्रकार रात बीत गई।

जब सवेरा हुआ तो हिमशुभ्रा जागी, और जब उसने सात बौनों को देखा तो वह सहम गई, किन्तु उनके दिल उसी तरह दया से भरे थे और वे पूछने लगे, "तेरा नाम क्या है?" उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम हिमशुभ्रा है।" उन्होंने फिर पूछा, "तू हमारे घर में कैसे आई?" इस पर उसने बताया कि मेरी सौतेली माँ ने मुझे मरवा डालना चाहा था, किन्तु शिकारी ने मुझे जीवन-दान दिया। तब मैं दिन भर भागती रही और अंत में आपके मकान पर आ पहुँची। बौनों ने पूछा, "क्या तू हमारे घर का काम करेगी, जैसे खाना पकाना, बिस्तर लगाना, कपड़े धोना, सीना बुनना? यदि तू ठीक प्रकार से साफ़-सुथरा रखेगी तो तू हमारे पास रह सकती है। फिर तुझे कोई कमी नहीं रहेगी।" हिमशुभ्रा ने कहा, "हाँ, हाँ, बहुत ख़ुशी से।" सुबह बौने पहाड़ों में जाते और कच्ची धातु और सोना खोजते और शाम को वापिस लौट आते। उस समय हिमशुभ्रा को भोजन तैयार रखना होता। दिन भर वह अकेली रहती। अतएव भले बौनों ने उसे सचेत करते हुए कहा, "अपनी सौतेली माँ से सावधान रहना! वह शीघ्र ही जान जाएगी कि तू यहाँ है। किसी को भी भीतर मत आने देना।"

उधर रानी को यह विश्वास हो गया था कि उसने हिमशुभ्रा

के फेफड़े और जिगर खा लिये हैं। अब उसके मन में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं आता था कि वह फिर सबसे बढ़कर और सबसे सुन्दर है। सो वह अपने दर्पण के सामने गई और बोली :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

दर्पण ने उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं यहाँ आप ही सबसे सुन्दर,
शैल-माल के पार किंतु जो हिमशुभ्रा है,
जिसे सात बौनों का आश्रय-स्नेह मिला है,
है वह निस्संदेह सहस्रगुनी सुन्दरतर।"

इससे तो उसे आघात लगा, क्योंकि उसे मालूम था कि दर्पण झूठ नहीं बोलता। अब उसकी समझ में आया कि शिकारी ने उसके साथ छल किया था और हिमशुभ्रा अब भी जीवित है। तब वह नये सिरे से सोचने लगी और सोचती ही रही, कि वह उसे किस प्रकार समाप्त करे, क्योंकि जब तक वह देश भर में सबसे अधिक सुन्दर न हो, उसकी ईर्ष्या उसे चैन कैसे लेने देती ! जब उसने अन्त में कुछ सोच निकाला, तो उसने अपना मुँह रँगकर फेरीवाली बुढ़िया के समान वस्त्र पहन लिये। अब वह बिल्कुल पहचानी नहीं जाती थी। इस वेष में वह सात पर्वतों

को पार कर, सात बौनों के घर पर जा पहुँची। उसने द्वार खट-खटाकर ग्रावाज़ लगाई, "ले लो, बढ़िया माल ले लो!" हिमशुभ्रा ने खिड़की से बाहर झाँका और कहा, नमस्कार भद्र महिला, आप क्या बेच रही हैं?" उसने उत्तर दिया, "बढ़िया माल, अच्छा माल—फ़ीते सब रंग के", और उसने एक फ़ीता दिखाया जो रंग-बिरंगे रेशम से बुना हुआ था। हिमशुभ्रा ने सोचा, "इस विश्वसनीय स्त्री को मैं भीतर बुला सकती हूँ।" उसने द्वार की कुण्डी खोलकर अपने लिये फ़ीता ख़रीद लिया। बूढ़ी बोली, "बेटी तू कैसी दीख रही है? आ मैं एक बार ठीक तरह से तेरे फ़ीता बाँध दूँ।" हिमशुभ्रा के मन में छल नहीं था। सो उसने फ़ीते बेचने वाली के सामने खड़े होकर अपने नया फ़ीता बँधवा लिया। किन्तु बुढ़िया ने फ़ीता तेज़ी से बाँधा और इतना कसकर बाँध दिया कि उसकी साँस रुक गई और वह मरी-सी होकर गिर पड़ी, "ले, अब हो गई तू सबसे सुन्दर", ऐसा कहकर वह स्त्री वहाँ से चम्पत हो गई।

उसके कुछ समय बाद संध्या समय सातों बौने घर पर आए और जब उन्होंने अपनी प्यारी हिमशुभ्रा को धरती पर पड़े देखा तो वे बड़े भयभीत हुए। वह हिलती-डुलती ही न थी और ऐसी लग रही थी मानो मर गई हो। उन्होंने उसे ऊपर उठाया और यह देखकर कि उसके बहुत कसकर फ़ीता बाँधा गया है, उन्होंने वह फ़ीता काटकर दो टुकड़े कर दिया। इससे वह थोड़ी साँस

लेने लगी और धीरे-धीरे फिर जीवित हो गई। जब बौनों ने जो-जो हुआ था वह सब सुना तो वे बोले, "फेरीवाली बुढ़िया दुष्ट रानी के अतिरिक्त और कोई नहीं थी। अब तू सावधान रहना और किसी को भी मत घुसने देना।"

उधर जब वह दुष्ट स्त्री घर पर पहुँची तो दर्पण के सम्मुख जाकर उसने पूछा :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

इस पर दर्पण ने पहले के समान उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं यहाँ आप ही सबसे सुन्दर,
शैल-माल के पार किंतु जो हिमशुभ्रा है,
जिसे सात बौनों का आश्रय-स्नेह मिला है,
है वह निस्संदेह सहस्रगुनी सुन्दरतर ।"

जब उसने यह सुना तो उसे ऐसा आघात लगा कि काटो तो ख़ून नहीं। उसे मालूम जो हो गया था कि हिमशुभ्रा फिर जीवित हो उठी है। वह बोली, "किन्तु इस बार मैं ऐसा उपाय सोच निकालूँगी जो तुझे समाप्त कर देगा।" वह जादू-टोना जानती थी। उनसे उसने एक विषैला कंघा तैयार किया। इसके बाद उसने वेष बदला और एक दूसरी बूढ़ी स्त्री का रूप भरा। अब उसने सात पर्वतों को पार करके द्वार

खटखटाया और आवाज़ लगाई, "ले लो, बढ़िया माल ले लो!" हिमशुभ्रा ने बाहर झाँककर कहा, "आगे जाइये, मुझे किसी को भीतर आने देने की आज्ञा नहीं है।" बुढ़िया ने कहा, "तुझे सुन्दर दीखने की आज्ञा तो होगी ही।" तब उसने विषैला कंघा बाहर निकाला और ऊपर उठाया। वह लड़की को इतना अच्छा लगा कि वह उसके चक्कर में आ गई और उसने द्वार खोल दिया। जब सौदा तय हो गया तो बूढ़ी ने कहा, "अब मैं तुझे ठीक तरह से कंघा कर दूँ।" भोली हिमशुभ्रा ने कुछ नहीं सोचा और बुढ़िया को कंघा कर लेने दिया, किन्तु अभी उसने बालों में कंघा लगाया ही था कि उसके विष ने असर किया और वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी। "रूप की रानी! अब तू समाप्त हुई।" यह कहती हुई वह दुष्ट स्त्री चल पड़ी। किन्तु भाग्य से शीघ्र ही संध्या हो गई जिस समय कि सातों बौने घर लौटते थे। जब उन्होंने हिमशुभ्रा को मुर्दे-जैसा धरती पर पड़े देखा तो उन्हे फ़ौरन सौतेली माँ पर सन्देह हुआ। ढूँढ़ने पर उन्हें वह विषैला कंघा मिला। उन्होंने उसे अभी निकाला ही था कि हिमशुभ्रा फिर होश में आ गई। तब उन्होंने उसे फिर चेतावनी दी कि वह सावधान रहे और किसी के लिये द्वार न खोले।

घर पर रानी दर्पण के सम्मुख खड़ी हुई और बोली:

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर!
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर?"

उसने पहले के समान उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं यहाँ आप ही सबसे सुन्दर,
शैम-माल के पार किंतु जो हिमशुभ्रा है,
जिसे सात बौनों का आश्रय-स्नेह मिला है,
है वह निस्संदेह सहस्रगुनी सुन्दरतर ।"

जब उसने दर्पण को इस प्रकार कहते सुना तो वह क्रोध से काँपने लगी और बोली, "हिमशुभ्रा को मरना ही होगा, चाहे इसमें अपना जीवन ही क्यों न चला जाए ।" इसके बाद वह एक बिल्कुल गुप्त और एकान्त कमरे में गई जहाँ कोई नहीं जाता था और वहाँ उसने एक बहुत विषैला सेब तैयार किया । सफ़ेद और लाल छिलके वाला वह सेब बाहर से इतना सुन्दर दीख रहा था कि हरेक के, जो भी उसे देखता, मुँह में पानी भर आता । किन्तु वह इतना विषैला था कि जो भी उसका एक टुकड़ा खा लेता, वह मर जाता । जब सेब तैयार हो गया तो उसने अपना मुँह रँगा और किसान-स्त्री का वेष धारण किया । फिर वह सात पर्वतों को पार कर सात बौनों के घर पहुँची । उसने द्वार खटखटाया । हिमशुभ्रा ने खिड़की से झाँककर कहा, "मुझे किसी व्यक्ति को भीतर बुलाने की आज्ञा नहीं है । सातों बौनों ने मुझे ऐसा करने से मना कर दिया है ।" किसान स्त्री ने उत्तर दिया, "मुझे भी मंज़ूर है । मेरे सेब तो बिक ही जाएँगे । लेकिन ले, यह एक मैं तुझे भेंट करना चाहती हूँ ।"

"नहीं, नहीं", हिमशुभ्रा बोली, "मुझे कुछ भी लेने की आज्ञा नहीं है।" बुढ़िया ने कहा, "क्या तू विष से डरती है ? तू देखती रह, अभी मैं इस सेब को दो भागों में काटे देती हूँ। लाल भाग तू खा ले और सफ़ेद मैं खा लूँगी।" सेब इस चतुराई से तैयार किया गया था कि केवल लाल भाग ही विषैला था। हिमशुभ्रा ने सेब को ललचाई दृष्टि से देखा और जब उसने देखा कि किसान स्त्री ने उसमें से एक टुकड़ा खा लिया है तो वह और अधिक विरोध न कर सकी और उसने विषैला हिस्सा ले लिया। उसने अभी उसका एक टुकड़ा मुँह में रखा ही था, कि वह मरकर भूमि पर गिर पड़ी। तब रानी ने उसे विकराल दृष्टि से देखा और जोर से हँसकर कहा, "बर्फ़ के समान श्वेत, रक्त के समान लाल, आबनूस की लकड़ी के समान काली ! इस बार बौने तुझे फिर न जगा सकेंगे।"

और जब उसने घर में दर्पण से पूछा :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

तो उसने अन्त में उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं आप देश में सबसे सुन्दर।"

तब कहीं उसके ईर्ष्यालु मन को शान्ति मिली।

जब शाम को बौने घर लौटे तो उन्होंने हिमशुभ्रा को भूमि पर मरे पड़े देखा। उसके मुँह से साँस बिल्कुल नहीं निकल रही थी और वह मर चुकी थी। उन्होंने उसे उठाया, ढूंढ़ा कि उन्हें कोई विषैली वस्तु मिल जाए, उसका फ़ीता खोला, बालों में कंघा किया, उसे पानी और शराब से धोया, किन्तु इस सबसे कुछ न हुआ। प्यारी लड़की मर चुकी थी और मरी ही रही। उन्होंने उसे अरथी पर रखा और सातों उसके पास बैठकर उसके लिए विलाप करने लगे। वे तीन दिन तक रोते रहे। इसके बाद उन्होंने उसे गाड़ना चाहा, किन्तु वह अब भी जीवित मनुष्य के समान स्वस्थ दीख रही थी और उसके गाल सुन्दर और सुर्ख़ थे। उन्होंने कहा, "इसे हम अँधेरी धरती में नहीं गाड़ सकते।" सो उन्होंने काँच का एक पारदर्शक ताबूत बनवाया, जिससे लोग उसे सब ओर से देख सकें और उसे भीतर लिटाकर ऊपर सोने के अक्षरों में उसका नाम लिखा और यह भी लिखा कि वह राजकुमारी थी। तब उन्होंने ताबूत पर्वत पर रख दिया। उनमें से कोई न कोई सदैव उसके पास रहता और उसकी चौकसी करता। वहाँ पशु-पक्षी भी आए और उन्होंने हिमशुभ्रा का शोक मनाया—पहले उल्लू, फिर कौआ और अन्त में कबूतर।

अब हिमशुभ्रा बहुत दिनों तक ताबूत में पड़ी रही और उसका शरीर सड़ा नहीं, बल्कि वह ऐसा दीखता था मानो

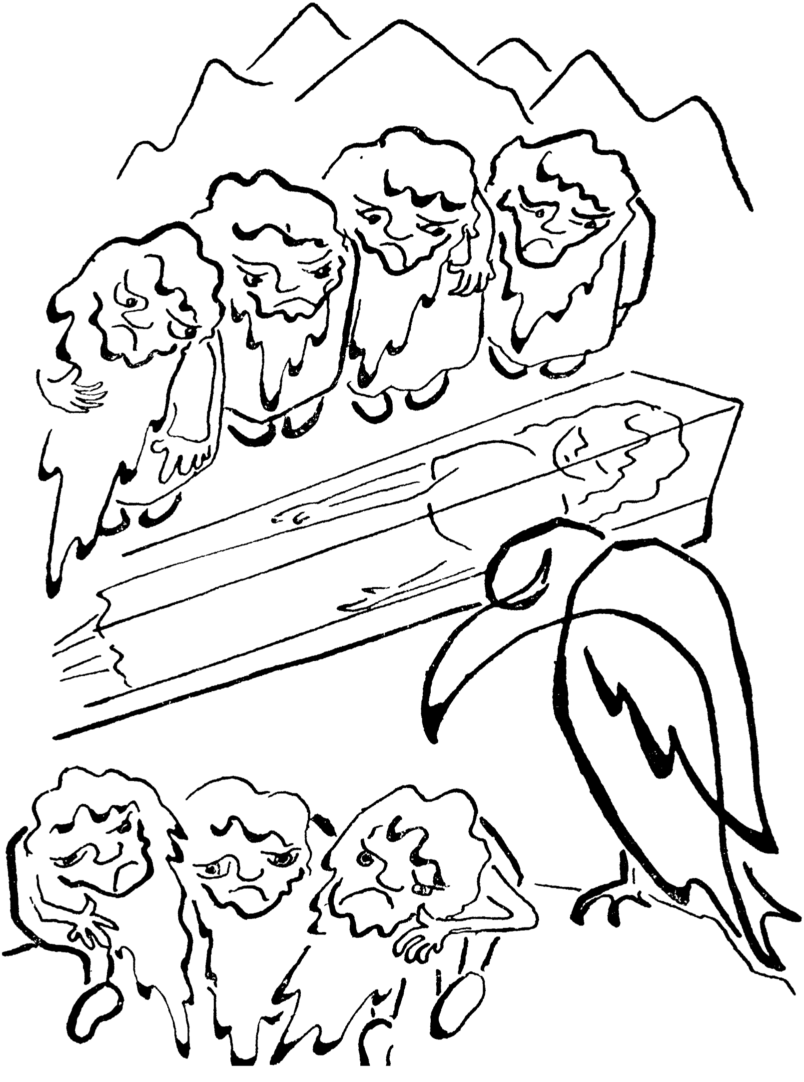

वह सो रही हो, क्योंकि वह हिम के समान श्वेत, रक्त के समान लाल व आबनूस की लकड़ी के समान काले बालों वाली थी। संयोग ऐसा हुआ कि एक राजकुमार उस वन में आया और बौनों के घर पर रात बिताने के लिये पहुँचा। उसने पर्वत के ऊपर ताबूत देखा और देखी उसके भीतर सुन्दर हिमशुभ्रा। उसके ऊपर सोने के अक्षरों में जो लिखा था वह पढ़ा। तब उसने बौनों से कहा, "यह ताबूत मुझे दे दो। तुम इसके बदले में जो चाहोगे, वह मैं तुम्हें दूँगा।" किन्तु बौनों ने उत्तर दिया, "हम इसे संसार के सारे सोने के बदले भी नहीं देंगे।" इस पर राजकुमार ने कहा, "तो इसे मुझे भेंट कर दीजिये, क्योंकि मैं हिमशुभ्रा को देखे बिना जीवित नहीं रह सकता। मैं इसका अपनी प्रियतमा के समान आदर-सम्मान करूँगा।" जब उसने इस प्रकार कहा तो बौनों को उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे ताबूत दे दिया।

राजकुमार ताबूत को अपने नौकरों द्वारा कन्धों पर उठवा ले चला। मार्ग में अकस्मात् उन्होंने एक झाड़ी से ठोकर खाई और झटके से सेब का विषैला हिस्सा गले से बाहर आ गया, जिसे हिमशुभ्रा ने खाया था। अधिक देर नहीं लगी कि उसने आँखें खोल दीं और ताबूत का ढकना ऊपर उठा दिया। वह जिन्दा होकर उठ बैठी। "हे भगवान, मैं कहाँ हूँ ?" वह चिल्लाई। राजकुमार ने हर्षित होकर कहा, "तुम मेरे पास

हो", और जो कुछ गुजरा था, वह सब बताकर कहा, "तुम मुझे संसार की सब वस्तुओं से प्यारी हो और तुम मेरी पत्नी बनोगी।" उधर हिमशुभ्रा भी उसे चाहने लगी। वह उसके साथ चली गई और बड़ी सजधज और धूमधाम से उनके विवाह की तैयारी होने लगी।

उत्सव में दुष्ट सौतेली माँ भी निमंत्रित थी। उसने जब सुन्दर वस्त्र धारण कर लिये, तो वह दर्पण के सामने गई और बोली :

"हे मेरे सम्मुख लटके नन्हे दर्पणवर !
बोलो, बाला कौन देश में सबसे सुन्दर ?"

दर्पण ने उत्तर दिया :

"हे रानी, हैं यहाँ आप ही सबसे सुन्दर,
पर युवती रानी निःसंशय है सुन्दरतर।"

इस पर वह दुष्ट नारी कोसने लगी और ऐसी बेहद व्याकुल हुई, कि अपने को क़ाबू में नहीं रख सकी। पहले तो वह विवाहोत्सव में बिल्कुल जाना ही नहीं चाहती थी। किन्तु वहाँ जाए बिना भी उसे चैन नहीं पड़ा। वह वहाँ जाने और तरुण रानी को देखने के लिये मजबूर हो गई।

२५ ज्यों ही वह भीतर घुसी, उसने हिमशुभ्रा को पहचान

लिया। डर श्रौर हैरानी से वह वहीं खड़ी की खड़ी रह गई श्रौर हिल-डुल भी न सकी। किन्तु लोहे के सलीपर पहले से ही कोयले की श्राग में रखे हुए थे। वह चिमटे से निकाले व उसके सामने रखे गये श्रौर तब उसको लाल जलते हुए जूते पहनने पड़े श्रौर तब तक नाचते रहना पड़ा, जब तक कि वह मरकर धरती पर नहीं गिर गई।

हैंज़ल व ग्रेटल

किसी बड़े वन के पास एक निर्धन लकड़हारा अपनी स्त्री और दो बच्चों सहित रहता था। लड़के का नाम था हैंज़ल और लड़की का नाम था ग्रेटल। उस लकड़हारे के पास पेट भर खाने को नहीं था। एक बार जब देश में भीषण अकाल पड़ा तो वह प्रतिदिन की रोटी की व्यवस्था भी न कर पाता था। जब वह रात को खाट पर लेटा अपनी अवस्था पर विचार कर रहा था और चिंता के मारे करवटें बदल रहा था, तो उसने ठंडी साँस लेकर अपनी पत्नी से कहा, "अब हमारा क्या होगा? हम अपने बेचारे बच्चों का पेट कैसे भर सकेंगे, जब कि हमारे पास हमारे स्वयं के लिए ही कुछ नहीं रह गया है?"

"मैं बताऊँ?" स्त्री बोली, "हम कल बहुत तड़के बच्चों को वन में उस स्थान पर ले जाएँगे जहाँ वन सबसे अधिक घना है। वहाँ हम उनके लिये आग जला देंगे और इसके साथ ही हरेक को एक-एक रोटी का टुकड़ा दे देंगे। इसके बाद हम उन्हें अकेला छोड़कर काम पर चले जाएँगे। उन्हें घर की राह तो मिलेगी ही नहीं और इस प्रकार हमें उनसे छुटकारा मिल जाएगा।"

"नहीं, नहीं !" पति बोला "ऐसा मैं नहीं करूँगा। अपने बच्चों को वन में अकेला छोड़कर मेरे हृदय पर कैसी बीतेगी ? जंगली पशु शीघ्र ही आ जाएँगे और उन्हें फाड़ डालेंगे।"

"मूर्ख हो", पत्नी ने कहा, "तब हमें चारों को भूखों मरना पड़ेगा।" उसने उसे चैन नहीं लेने दिया, जब तक कि वह राज़ी न हो गया। वह बोला, "किन्तु बेचारे बच्चों पर मुझे तरस आता है।"

दोनों बच्चे भी भूख के मारे सो नहीं सके थे और जो सौतेली माँ ने पिता से कहा था, वह उन्होंने सुन लिया था। ग्रेटल आठ-आठ आँसू रोई और हैंज़ल से बोली, "हमारे दिन पूरे हुए।" "शांत ग्रेटल", हैंज़ल बोला, "रंज न कर। मैं निश्चय ही उपाय खोज निकालूँगा।"

माँ-बाप के सो जाने पर उसने उठकर अपना कोट पहना और किवाड़ी खोलकर चुपके से बाहर निकल गया। उस समय चन्द्रमा बिलकुल निर्मल चमक रहा था और घर के बाहर पड़े हुये बिल्लौर पत्थर रुपयों की तरह चमचमा रहे थे। हैंज़ल ने झुककर जेब में उतने पत्थर भर लिये जितने उसमें आए। उसके बाद वह लौट गया और ग्रेटल से बोला, "प्यारी बहन, धीरज धर और आराम से सो जा। भगवान हमें नहीं छोड़ेंगे।" इतना कहकर वह चारपाई पर पड़ गया।

जब दिन निकला तो लकड़हारे की स्त्री ने सचमुच ही आकर दोनों बच्चों को जगाया, "उठो आलसियो, हम वन में जाकर लकड़ी लाएँगे।" इसके बाद उसने हरेक को रोटी का एक-एक टुकड़ा देकर कहा, "यह थोड़ा कुछ तुम्हारे पास दोपहर को खाने को हो गया, किन्तु इसे पहले ही न खा डालना, तुम्हें और कुछ नहीं मिलेगा।" हैंज़ल की जेब में पत्थर भरे होने के कारण ग्रेटल ने रोटियाँ अपने पल्ले में बाँध लीं। इसके बाद वे सब इकट्ठे वन के मार्ग पर चल दिये। जब वे थोड़ी देर चल चुके तो हैंज़ल खड़ा होकर पीछे घर की ओर ताकने लगा। ऐसा वह बार-बार करता। पिता ने कहा, "हैंज़ल तू क्या देख रहा है जो पीछे रहा जा रहा है? होश में रह और चलना मत भूल।"

"ओह पिता जी", हैंज़ल बोला, "मैं अपनी सफ़ेद बिल्ली की ओर देख रहा हूँ, जो छत पर बैठी मुझे नमस्ते कर रही है।" इस पर लकड़हारे की स्त्री बोली, "मूर्ख, वह तेरी बिल्ली नहीं, बल्कि उगता हुआ सूर्य है जो चिमनी पर चमक रहा है।" किन्तु हैंज़ल तो बिल्ली की ओर देख नहीं रहा था, बल्कि हर बार एक-एक चमकता हुआ पत्थर जेब से निकाल कर मार्ग पर फेंकता जा रहा था।

जब वे बीचोबीच जंगल में पहुँचे तो पिता ने कहा, "बच्चो, अब लकड़ी इकट्ठी करो। मैं आग जलाए देता हूँ जिससे तुम्हें ठंड न लगे।" हैंज़ल व ग्रेटल ने सूखी लकड़ियाँ ला-लाकर एक

छोटा पर्वत-सा बना दिया। लकड़ियों में आग लगा दी गई और जब ऊँची ऊँची लपटें उठने लगीं तो स्त्री ने कहा, "अब आग के पास पड़कर आराम करो, हम जंगल में जाकर लकड़ी काटते हैं। जब हम निबट जाएँगे तो आकर तुम्हें ले जाएँगे।"

हैंज़ल और ग्रेटल आग के पास बैठ गए और जब दोपहर हुई तो हरेक ने अपना रोटी का टुकड़ा खा लिया। उन्हें कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। सो उन्हें विश्वास था कि उनके पिता निकट ही हैं। किन्तु यह कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ नहीं थी। यह थी एक डाल जिसे पिता ने एक वृक्ष पर बाँध दिया था और वही हवा से इधर उधर टकरा रही थी। जब वे इस प्रकार देर तक बैठे रहे तो थकान के मारे उनकी आँखें झपकने लगीं और वे गहरी नींद में सो गये। अन्त में जब वे जागे तो रात की अँधेरी छा चुकी थी। ग्रेटल रोने लगी और बोली, "अब हम वन के बाहर कैसे निकलेंगे?" किंतु हैंज़ल ने उसे दिलासा दिया, "कुछ देर चन्द्रमा के निकलने तक प्रतीक्षा कर, तब हमें निश्चय ही रास्ता मिल जाएगा।" और जब पूरा चाँद निकला तो हैंज़ल ने अपनी नन्ही बहन का हाथ पकड़ा और पत्थरों के निशान देखता-देखता चलता गया। पत्थर नए ढले हुये सिक्कों के समान चमक रहे थे और उन्हें मार्ग दिखा रहे थे।

३१ वे रात भर चलते रहे और दिन निकलते-निकलते अपने घर

पहुँच गये। उन्होंने द्वार खटखटाया और जब लकड़हारे की स्त्री ने द्वार खोला और पाया कि हैंज़ल और ग्रेटल हैं तो वह बोली, "अरे दुष्ट बच्चो, तुम इतनी देर तक वन में सोए रहे। हमने तो सोचा था कि तुम वापिस नहीं आओगे।" किंतु पिता को इससे प्रसन्नता हुई, क्योंकि उसे इस बात से गहरा धक्का लगा था कि वह बच्चों को बिल्कुल अकेला छोड़ आया है।

अधिक दिन नहीं बीते कि सब ओर फिर अकाल पड़ा। अब जैसे-जैसे माँ रात में चारपाई पर पड़ी पिता से कह रही थी, वह सब बच्चों ने सुन लिया। उसने कहा, "सब फिर चुक गया है। हमारे पास आधी रोटी और बची है और इसके बाद खेल ख़त्म। बच्चों को जाना ही होगा। हम उन्हें वन में और गहरे ले जाएँगे जिससे कि वे दुबारा मार्ग न पा सकें। इसके अलावा हमारे पास मुक्ति का कोई उपाय नहीं है।" पति के हृदय को इससे चोट लगी। वह सोचने लगा, "यह अच्छा होता, यदि मैं अंतिम ग्रास अपने बच्चों के साथ बाँटकर खाता।" किन्तु जो भी उसने कहा स्त्री ने उस पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। जो 'क' कहता है उसे 'ख' भी कहना पड़ेगा। उसने पहली बार घुटने टेक दिये थे। सो उसे दूसरी बार भी टेकने पड़े।

बच्चे अब भी जाग रहे थे और उन्होंने यह बातचीत सुनी थी। जब माता-पिता सो गए तो हैंज़ल उठा। उसने पहले के समान बाहर जाकर पत्थर इकट्ठे करने चाहे किन्तु लकड़हारे

की स्त्री ने द्वार में ताला लगा रखा था। उसने अपनी नन्ही बहन को दिलासा दिया और कहा, "ग्रेटल, रो मत और आराम से सो। भगवान हमारी निश्चय ही सहायता करेंगे।"

सुबह तड़के ही लकड़हारे की स्त्री आई और बच्चों को चारपाई से उठा ले गई। उन्हें अपना अपना रोटी का टुकड़ा मिला, किन्तु वह पहले टुकड़े से छोटा था। वन के मार्ग में हैंज़ल जेब में रोटी तोड़ता और खड़ा होकर एक टुकड़ा धरती पर फेंक देता। "हैंज़ल, तू क्यों खड़ा हो-होकर पीछे देखता है ?" पिता बोला, "अपने रास्ते चल।"

"मैं अपना छोटा कबूतर देख रहा हूँ, जो छत पर बैठा मुझे नमस्ते कर रहा है", हैंज़ल ने उत्तर दिया।

"मूर्ख", लकड़हारे की स्त्री बोली, "वह तेरा छोटा कबूतर नहीं, बल्कि उगता हुआ सूर्य है, जो चिमनी पर चमक रहा है।" किन्तु हैंज़ल धीरे-धीरे रोटी के टुकड़े मार्ग पर फेंकता रहा।

लकड़हारे की स्त्री बच्चों को वन में और गहरे ले गई, जहाँ वे अपने जीवन में आज तक नहीं पहुँचे थे। वहाँ फिर बड़ा सा अलाव जलाया गया और माँ बोली, "बच्चो, यहीं बैठे रहना और जब तुम थक जाओ तो थोड़ा सो लेना। हम वन में जाकर लकड़ी काटते हैं और शाम को जब हम निबट जाएँगे तो आकर तुम्हें ले जाएँगे।"

जब दोपहर हुई तो ग्रेटल ने अपनी रोटी हैंज़ल के साथ बाँट ली। हैंज़ल तो अपना टुकड़ा रास्ते में डाल ही चुका था। इसके बाद वे सो गए और शाम बीत गई, किन्तु कोई बेचारे बच्चों के पास नहीं आया। वे रात का अँधेरा होने पर ही जागे। हैंज़ल अपनी नन्ही बहन को दिलासा देता हुआ बोला, "ग्रेटल, बस चाँद निकलने तक ठहर। तब तो जो रोटी के टुकड़े मैं डालता आया हूँ, वे हमें दीखने लगेंगे और हमें घर की राह दिखाएँगे।"

चाँद निकलने पर वे चल पड़े। किन्तु उन्हें कोई रोटी का टुकड़ा नहीं मिला, क्योंकि वन और खेतों में उड़ते हुए हज़ारों पक्षियों ने उन्हें चुग लिया था। हैंज़ल ने ग्रेटल से कहा, "हम निस्संदेह रास्ता पा जाएँगे", किंतु रास्ता उन्हें मिला नहीं। वे पूरी रात और सुबह से शाम तक दिन भर चलते रहे, किंतु जंगल के बाहर न निकले। उन्हें बहुत ज़ोर की भूख लगी हुई थी, क्योंकि नीचे लगी कुछेक बेरियों के अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं खाया था। वे बहुत ही अधिक थक गए थे और उनकी टाँगों ने जवाब दे दिया था। सो वे एक वृक्ष के नीचे पड़कर सो गए।

घर छोड़े हुए उन्हें यह तीसरा दिन था। उन्होंने फिर चलना शुरू किया, किंतु वे वन में गहरे गहरे घुसते चले गये। यदि शीघ्र ही कोई सहायता न मिलती तो वे भूखे मर जाते। दोपहर होने

पर उन्होंने एक सुन्दर बर्फ़-सा सफ़ेद पक्षी एक डाल पर बैठा देखा। वह ऐसे मधुर स्वर में गा रहा था कि वे खड़े होकर सुनने लगे। जब वह गा चुका तो वह अपने पंख फैलाकर उनके आगे-आगे उड़ने लगा और वे उसके पीछे-पीछे चलकर एक घर पर पहुँचे जिसकी छत पर पक्षी बैठ गया। जब वे घर के बिल्कुल निकट आ गए तो क्या देखते हैं कि घर रोटियों का बना हुआ और केकों से पटा हुआ है। उसकी खिड़कियाँ चमकीली चीनी की बनी हुई थीं।

हैंज़ल ने कहा, "आ, अब हम वहाँ चलकर जी भरकर खा लें। मैं छप्पर में से एक टुकड़ा खाऊँगा और ग्रेटल, तू खिड़की में से खाना। वह मीठा रहेगा।" हैंज़ल ऊपर की ओर लपका और उसने अपने लिये छत में से थोड़ा-सा चखने के लिये तोड़ा। ग्रेटल खिड़की पर खड़ी हो गई और उसमें से कुतरकर खाने लगी। उसी समय कमरे से पतली, तीखी आवाज़ आई:

"शोर हो रहा कैसा बाहर,
कौन खा रहा है मेरा घर?"

बच्चों ने उत्तर दिया:

"मैं हूँ पवन अरी अनजान
देवों की प्यारी सन्तान।"

और निश्चिन्त हो खाते रहे। हैंज़ल को छत का स्वाद बहुत अच्छा लग रहा था। सो उसने उसका एक बड़ा-सा टुकड़ा तोड़ गिराया और ग्रेटन ने खिड़की का पूरा गोल शीशा खींच लिया। तभी अचानक द्वार खुला और एक बहुत बूढ़ी स्त्री बैसाखी के सहारे चलती हुई आई।

हैंज़ल और ग्रेटल इतने भयभीत हुए कि जो कुछ उन्होंने हाथ में ले रखा था, सब गिरा दिया। किन्तु बुढ़िया सिर हिलाती हुई बोली, "अहा, प्यारे बच्चो! यहां तुम्हें कौन ले आया? आओ, भीतर आओ, और मेरे पास रहो। तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा।" वह दोनों का हाथ पकड़कर घर में लिवा ले गई। वहाँ बढ़िया भोजन परोसा गया—दूध और मीठे पुए, सेब और अख़रोट। इसके बाद दो सुन्दर सफ़ेद नन्हे बिस्तर लगाए गए और हैंज़ल और ग्रेटल उन पर लेट गए और उन्हें लगा मानो स्वर्ग में हों।

बुढ़िया ने इतनी भलमनसाहत का केवल स्वाँग किया था। वह थी असल में एक चुड़ैल जो बच्चों की ताक में रहती थी। उसने बच्चों को फँसाने के लिये ही रोटी का महल बनाया था। जब कोई उसके चंगुल में फँस जाता तो वह उसे मारकर पकाती और खा लेती और वह दिन उसके लिये त्योहार होता। चुड़ैलों के लाल आँखें होती हैं और वे दूर तक नहीं देख सकतीं किन्तु उनमें पशुओं जैसी सूँघने की शक्ति होती है और यदि आदमी उन की ओर आते हैं तो उन्हें पता लग जाता है। जब हैंज़ल व ग्रेटल

उसके निकट पहुँचे तो वह दुष्टता से हंसती हुई, व्यंग्य स्वर में कहने लगी, "इन्हें तो मैंने फँसा लिया। अब ये मुझसे बचकर नहीं जा सकते।" बच्चों के उठने के पहले सुबह तड़के ही वह उठ खड़ी हुई, और जब उसने प्यारे-से बच्चों को, जिनके पूरे मुख पर लालिमा फूट रही थी, सोते देखा तो वह गुनगुनाई, "यह भोजन बढ़िया रहेगा।" तभी उसने हैंज़ल को अपने सूखे हाथ से पकड़ लिया और उसे एक छोटे अस्तबल में ले जाकर एक जालीदार द्वार के पीछे बंद कर दिया। उसने जितना चिल्लाना चाहा, चिल्लाया किन्तु इससे कुछ बना नहीं। इसके बाद उसने ग्रेटल के पास जाकर उसे हिलाकर जगाया और कहा, "आलसी लड़की, खड़ी हो। पानी ला और अपने भाई के लिए कोई बढ़िया-सी चीज़ पका। वह बाहर अस्तबल में बैठा हुआ है और उसे मोटा-ताज़ा बनना है। मोटा हो जाने पर मैं उसे खाऊँगी।" ग्रेटल यह सुनकर बिलख-बिलखकर रोने लगी किन्तु इससे कुछ न बना। उसे दुष्ट चुड़ैल की आज्ञानुसार चलना पड़ा।

अब बेचारे हैंज़ल के लिये बढ़िया से बढ़िया खाना तैयार किया जाता, किंतु ग्रेटल केकड़े की कड़ी खाल के अतिरिक्त कुछ न पाती। प्रतिदिन प्रातःकाल बुढ़िया अस्तबल में जाती और पुकारती, "हैंज़ल, अपनी उँगलियाँ बाहर कर, जिससे मैं टटोल कर देखूं कि तू मोटा हुआ है कि नहीं।" किंतु हैंज़ल एक पतली हड्डी बाहर कर देता। बुढ़िया की आँखों की रोशनी ख़राब

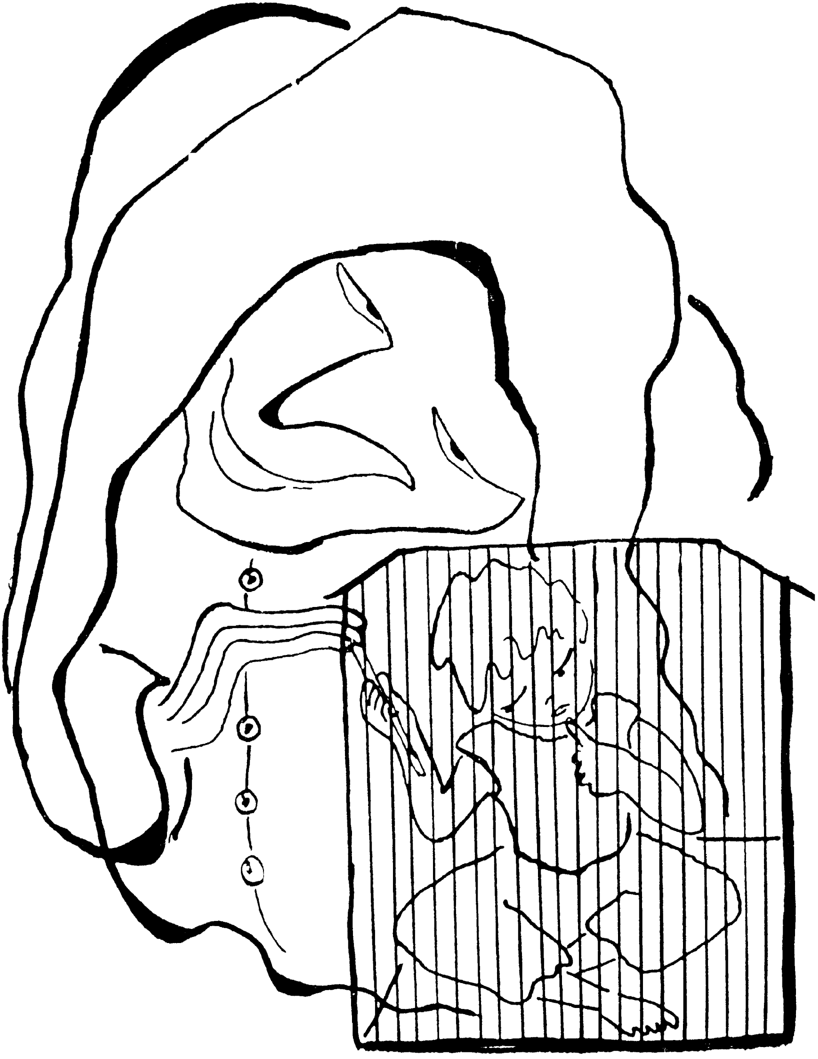

थी सो वह हड्डी देख न पाती और समझती कि वह हैंज़ल की उँगली है। उसे हैरानी होती कि वह बिल्कुल भी मोटा नहीं हो रहा है। जब चार हफ़्ते बीत जाने पर हैंज़ल कमज़ोर ही बना रहा तो चुड़ैल का धैर्य जाता रहा। वह अब और अधिक न रह सकती थी। सो उसने लड़की से कहा, "ओ ग्रेटल, जल्दी-जल्दी पानी ला। हैंज़ल मोटा रहे या पतला, कल मैं उसे काटकर पकाऊँगी।" हाय, बेचारी नन्ही बहन पानी लाते-लाते कैसी बिलख रही थी। उसने पुकारा, "हे भगवान, हमारी रक्षा तो करो ही! यदि हमें वन में जंगली पशु खा लेते तो हम साथ-साथ तो मरते।"

"अपना राग बन्द कर", बुढ़िया कहने लगी, "इस सबसे कुछ न होगा।"

सुबह तड़के ही ग्रेटल को बाहर जाकर और पानी देग में भरकर आग पर चढ़ाना पड़ा। बुढ़िया ने कहा, "पहले हम रोटी पकाएँगे। मैंने भट्टी जला दी है और ख़मीर फेंटकर तैयार कर लिया है।" वह ग्रेटल को ढकेलकर भट्टी पर ले गई। उसमें आग की लपटें बाहर की ओर निकल रही थीं। वह चुड़ैल बोली, "भीतर घुसकर देख कि भट्टी अच्छी तरह गरम हो गई है क्या, जिससे हम रोटियाँ भीतर रख दें।"

उसका इरादा था कि जब ग्रेटल उसके भीतर जाए तो वह भट्टी बन्द कर दे, जिससे कि ग्रेटल उसके भीतर भुन जाए।

उसका इरादा इसे भी खा डालने का था। किन्तु ग्रेटल उसके मन की बात ताड़ गई और बोली, "मुझे पता नहीं कि यह कैसे होता है, मैं भीतर कैसे जाऊँ?"

"बुद्धू", बुढ़िया बोली, "दरवाज़ा काफ़ी बड़ा तो है। अब तू देख, मैं तक भीतर घुस सकती हूँ।" यों कहती हुई वह उधर चली और उसने सिर भट्टी के भीतर किया। उसी क्षण ग्रेटल ने उसे ऐसा धक्का दिया कि वह भीतर दूर चली गई और फिर लोहे का दरवाज़ा बन्द करके उसकी कुंडी चढ़ा दी। लो! तब तो वह चुड़ैल बहुत डरावनी आवाज़ में चीख़ने लगी। किन्तु ग्रेटल तो भाग चली और दुष्ट चुड़ैल तड़प-तड़पकर जल मरी।

उधर ग्रेटल सीधी हैंज़ल के पास दौड़ी गई और अस्तबल खोलकर बोली, "हैंज़ल, हम मुक्त हुए, बूढ़ी चुड़ैल मर गई।" इस पर तो हैंज़ल ऐसा उछला जैसा पिंजड़े का द्वार खुलने पर पक्षी उछलता है। अहा, तब तो वे कैसे हर्षित हुए व गले मिले! अब उन्हें भय की तो कोई बात रह ही नहीं गई थी। सो वे चुड़ैल के घर में घुसे। वहाँ हर कोने में मोतियों व रत्नों से भरे बक्स रखे थे। "ये तो बिल्लौर पत्थरों से कहीं अच्छे हैं", कहते हुए हैंज़ल ने अपनी जेब में जितने आ सके भर लिये। ग्रेटल कहने लगी, "मैं भी थोड़े घर ले चलूँ", और उसने अपना पल्ला भर लिया। तब हैंज़ल बोला, "आ अब चलें, जिससे हम चुड़ैल के वन के बाहर निकल जाएँ।"

कई घंटे चलने के बाद वे एक बड़ी नदी पर पहुँचे। हैंज़ल कहने लगा, "हम पार नहीं उतर सकेंगे। नदी पर कोई पुल दिखाई दे रहा है न पुलिया।"

ग्रेटल ने उत्तर दिया, "यहाँ कोई नाव भी नहीं चलती, किन्तु वह एक बत्तक तैर रही है। यदि मैं उससे प्रार्थना करूँ तो वह हमें पार कर देगी।" सो उसने आवाज़ दी :

सुन री नन्ही बत्तक प्यारी,
हैंज़ल - ग्रेटल खड़े यहाँ री।
पुल है नहीं, दया दिखला दे,
पीठ चढ़ा उस पार लगा दे।

बत्तक उनके पास आ गई। हैंज़ल उसके ऊपर बैठ गया और उसने बहन से भी अपने पास बैठने को कहा। ग्रेटल ने उत्तर दिया, "नहीं, इससे नन्ही बत्तक पर बहुत बोझ हो जाएगा। यह हमें एक-एक करके पार उतार देगी।" सहृदय जीव ने ऐसा ही किया और जब वे ठीक-ठाक उस पार हुए और कुछ देर चले तो उन्हें वन पहचाना-सा लगने लगा। अन्त में उन्होंने दूर से अपना घर देखा। तब तो वे दौड़ लगाने लगे। घर पर कमरे में छलाँग लगा दी और पिता के गले लिपट गये।

जब से पिता ने बच्चों को वन में छोड़ा उसे किसी क्षण सुख का अनुभव नहीं हुआ। स्त्री तो मर ही चुकी थी।

ग्रेटल ने अपना पल्ला खोल दिया और मोती व रत्न कमरे में बिखर गए और उसके ऊपर से हैंज़ल एक के बाद एक मुट्ठी भरकर मोती व रत्न फेंकने लगा।

इस प्रकार सारे कष्ट समाप्त हुए और एक साथ वे सब सुख-चैन से रहने लगे।

पूरी हुई कहानी, वह दौड़ी चुहिया रानी। जो उसे पकड़े, उसकी खाल से अपने लिए एक बड़ी-सी टोपी बनवा ले।

सुनहली मुर्ग़ाबी

एक आदमी के तीन पुत्र थे। उनमें सबसे छोटा बुद्धू कहलाता था। उससे लोग घृणा करते व उसकी हँसी उड़ाते और हर अवसर पर उसका अपमान किया जाता। एक बार सबसे बड़े ने लकड़ी काटने के लिये वन में जाना चाहा। जाने के पहले उसकी माँ ने उसे अंडों से बना एक सुन्दर बढ़िया केक और एक बोतल शराब दी, जिससे कि वह भूखा-प्यासा न मरे। जब वह वन में पहुँचा तो उसे एक सन-सफ़ेद छोटा-सा बूढ़ा आदमी मिला जिसने उसे अभिवादन करके कहा, "मुझे अपने थैले में से केक का एक टुकड़ा दे दे और अपनी शराब में से एक घूँट पी लेने दे; मैं बहुत भूखा-प्यासा हूँ।"

"यदि मैं तुझे अपना केक व अपनी शराब दे दूँ तो मेरे पास तो कुछ भी नहीं रहेगा। चल, अपनी राह लग!" यह कहते हुए चतुर लड़के ने उस आदमी को वहीं खड़ा छोड़ दिया। और जब उसने एक वृक्ष काटना शुरू किया तो अधिक देर नहीं लगी कि कुल्हाड़ी का वार चूक गया और कुल्हाड़ी उसके हाथ में जा घुसी जिससे कि उसे घर जाकर अपने पट्टी बँधवानी पड़ी। वैसे यह सब उसी सन-सफ़ेद छोटे-से आदमी से मिला था।

इसके बाद दूसरा पुत्र वन में गया और माँ ने बड़े पुत्र के समान ही उसे अंडों से बना एक केक व एक बोतल शराब दी। इसे भी पहले के समान वही छोटा-सा आदमी मिला और उसने एक टुकड़ा केक व एक घूँट शराब का सवाल किया, किन्तु दूसरे लड़के ने बिल्कुल समझदारी से कह दिया, "जो मैं तुझे दे दूँगा वह मेरे पास तो कम ही हो जाएगा; चल, अपनी राह लग!" उसने उस आदमी को वहीं खड़ा छोड़ दिया और चला गया। इसकी सज़ा दूर नहीं रही। जब उसने दो-चार कुल्हाड़ी वृक्ष पर मारीं तो वह अपने पैर में कुल्हाड़ी मार बैठा, जिससे कि उसे उठाकर घर पर ले जाना पड़ा।

इस पर बुद्धू कहने लगा, "पिता जी, एक बार मुझे भी बाहर जाकर लकड़ी काटने दीजिये।"

पिता ने उत्तर दिया, "तेरे भाई इससे चोट खा चुके हैं, इससे दूर रहना; तुझे तो यह बिल्कुल भी नहीं आता है।"

पर बुद्धू तो बहुत देर तक विनती करता ही रहा। अन्त में पिता ने कह दिया, "चला जा, ठोकर खाकर तू ख़ुद ही सीख जाएगा।"

माँ ने उसे एक केक दिया जो पानी से राख में पकाया गया था और उसके साथ एक बोतल खट्टी बियर दी। जब वह वन में पहुँचा तो उसे पहले के समान वही सन-सफ़ेद छोटा-सा बूढ़ा

श्रादमी मिला। उसने उसे *अभिवादन करके* कहा, "मुझे अपने केक में से एक टुकड़ा और अपनी बोतल से एक घूँट लगा लेने दे; मैं बहुत भूखा-प्यासा हूँ।"

बुद्धू ने उत्तर दिया, "मेरे पास तो राख में पकाया हुआ केक और खट्टी बियर है। यदि तुझे यह ठीक लगे तो हम बैठकर खा लें।"

वे बैठ गए और जैसे ही बुद्धू ने अपना राख में पकाया हुआ केक निकाला, वह बढ़िया अंडों का केक हो गया और खट्टी बियर बढ़िया शराब बन गई। अब उन्होंने खाया पिया और इसके बाद वह आदमी बोला, "तू भले हृदय वाला है और ख़ुशी से अपनी चीजों को बाँटकर खाता है। सो मैं तुझे भाग्यशाली बनाऊँगा। वहाँ जो पुराना वृक्ष खड़ा है, उसे काट डाल, उसकी जड़ों में तुझे कुछ मिलेगा।" इसके बाद उस छोटे-से आदमी ने विदा ली।

बुद्धू ने जाकर वह वृक्ष काट गिराया और जब वह गिरा तो जड़ों में एक मुर्ग़ाबी बैठी थी, जिसके पंख असली सोने के थे। उसने उसे उठाकर साथ लिया और एक सराय में पहुँचा जहाँ वह रात बिताना चाहता था। सराय वाले के तीन लड़कियाँ थीं। उन्होंने जो मुर्ग़ाबी देखी तो उन्हें कुतूहल हुआ कि यह कैसा अद्भुत पक्षी है। उसके सुनहले पंखों में से एक पंख पाने का

उनका बहुत-बहुत मन हुआ। सबसे बड़ी ने सोचा, 'ऐसा मौक़ा तो निश्चय ही मिलेगा जब मैं अपने लिये एक पंख नोच सकूँगी।' और जब एक बार बुद्धू बाहर गया तो उसने मुर्ग़ाबी के पंख पकड़ लिये किन्तु उसकी उँगलियाँ व हाथ उसी के साथ चिपके रह गए। उसके फ़ौरन बाद ही दूसरी आई और उसे अपने लिये एक सुनहला पंख ले लेने के सिवाय दूसरा विचार ही न आया। उसने अभी अपनी बहन को छुआ ही था कि वह भी चिपक गई। अन्त में तीसरी भी इसी इरादे से आई। तभी दोनों चिल्ला पड़ीं, "दूर रह, भगवान के लिये दूर रह!" किन्तु उसकी समझ में न आया कि वह क्यों दूर रहे। और वह सोचने लगी, 'जब वे वहाँ हैं, तो मैं भी वहाँ जा सकती हूँ।' सो उसने छलाँग लगा दी और ज्यों ही उसने अपनी बहन को छुआ तो वह भी उसके साथ चिपक गई। इस प्रकार उन्हें मुर्ग़ाबी के पास ही रात बितानी पड़ी।

दूसरे दिन प्रातःकाल बुद्धू ने मुर्ग़ाबी बग़ल में दबाई और वह चल पड़ा। उसने तीनों लड़कियों की कोई चिन्ता न की जो उससे चिपकी हुई थीं। उन्हें उसके पीछे-पीछे भागते रहना पड़ा। मैदान के बीच उन्हें पादरी मिला और जब उसने यह जलूस देखा तो वह बोला, "अरी निर्लज्ज लड़कियो, कुछ तो शर्म खाओ! तुम इस नौजवान छोकरे के पीछे-पीछे क्यों दौड़ रही हो, क्या तुम्हें यह शोभा देता है?" यह कहते-कहते उसने सबसे

छोटी का हाथ पकड़कर उसे खींच लेना चाहा। किन्तु उसने ज्यों ही उसे छुआ तो वह भी उसी तरह चिपक गया और उसे स्वयं भी पीछे-पीछे दौड़ना पड़ा। अधिक समय नहीं बीता कि पादरी का नौकर उधर आ निकला और उसने पादरी को देखा, जो तीन लड़कियों का पैदल पीछा कर रहा था। उसे आश्चर्य हुआ और उसने आवाज़ लगाई, "अरे पादरी साहब, इतनी तेज़ी से कहाँ ? भूलिये नहीं कि आज ही हमें एक बच्चे का नामकरण करना है।" वह दौड़कर उसके पास पहुँचा और उसने उसका हाथ पकड़ लिया और वह भी चिपक गया। जब वे पाँचों एक दूसरे के पीछे खिचे जा रहे थे, दो किसान अपनी कुदालें लिये खेत से आ रहे थे। पादरी ने उन्हें आवाज़ देकर उनसे प्रार्थना की कि आप कृपया मुझे व मेरे नौकर को छुड़ा दीजिये। उन्होंने अभी पादरी को छुआ ही था, कि वे चिपके रह गए। अब वे सात हो गए, जो मुर्ग़ाबी लिये जाते बुद्धू के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे।

इसके बाद बुद्धू एक शहर में आया। वहाँ एक राजा राज्य करता था। उसके एक कन्या थी, जो इतनी गंभीर थी कि उसे कोई भी हँसा नहीं पाता था। इस कारण राजा ने आज्ञा करवा दी थी कि जो उसे हँसा देगा, वही उसे ब्याह लेगा।

जब बुद्धू ने यह सुना तो वह अपनी मुर्ग़ाबी व अपने पीछे चलने वालों को साथ लिये राजकुमारी के पास पहुँचा, और जब उसने सात व्यक्तियों को एक दूसरे के पीछे दौड़ते आते देखा तो

वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। उसकी हँसी रुक ही नहीं रही थी।

अब तो बुद्धू ने उसके साथ ब्याह की माँग की, किन्तु राजा को यह दामाद पसन्द नहीं आया। वह हर प्रकार के बहाने बनाने लगा और कहने लगा कि तुम पहले मेरे पास ऐसा आदमी लाओ, जो तहख़ाने में भरी पूरी शराब पी जाए।

बुद्धू को उस सन-सफ़ेद छोटे-से आदमी का ध्यान आया कि वह उसे अवश्य ही सहायता दे सकेगा। वह वन में उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ उसने वृक्ष काटा था। वहाँ उसे एक आदमी बैठा हुआ मिला, जिसने रोनी-सी सूरत बना रखी थी। बुद्धू ने पूछा, "तुम्हारे हृदय को किस कारण ऐसी चोट पहुँची है?" उसने उत्तर दिया, "मुझे बहुत ज़ोर की प्यास लग रही है और मैं इसे बुझा नहीं पा रहा हूँ। ठंडा पानी मुझे सुहाता नहीं। शराब का एक पीपा मैंने ज़रूर ख़ाली कर दिया है, लेकिन जलते पत्थर पर एक बूँद का क्या असर होता है?"

"तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ", बुद्धू बोला। "बस मेरे साथ चलो, तुम तृप्त हो जाओगे।"

वह उसे राजा के तहख़ाने में ले गया। वह आदमी पीता ही चला गया, यहाँ तक कि उसकी कमर में दर्द होने लगा। और एक दिन बीतते न बीतते वह सारा तहख़ाना पी गया।

बुद्धू ने फिर अपनी स्त्री की माँग की। इस पर राजा को क्रोध आ गया कि एक मामूली लड़का, जिसे हर एक बुद्धू कहता है, उसकी कन्या को ले जाने वाला है। उसने नई शर्त रखी : "तुम्हें पहले एक आदमी लाना होगा, जो रोटियों का एक पूरा पर्वत खा सके।"

बुद्धू उसी दम वन में गया। वहाँ उसी स्थान पर एक आदमी बैठा रस्सी से अपना पेट बाँधते-बाँधते उदास मुँह बनाए कह रहा था, "मैंने पूरे तन्दूर की डबलरोटी खाली हैं, किन्तु यदि किसी को इतने ज़ोर की भूख लगी हो जितने ज़ोर की मुझे लग रही है तो इतनी-सी रोटी से क्या होता है। मेरा पेट खाली ही रहता है और भूखा मरने से बचने के लिये मुझे अपने रस्सी बाँधनी पड़ रही है।"

बुद्धू इससे ख़ुश हुआ और बोला, "उठो और मेरे साथ चलो। तुम्हें भरपेट भोजन मिलेगा।"

वह उसे राज-दरबार में ले गया। राजा ने राज्य-भर का आटा ढुलवा मँगाया था और उसका एक बहुत बड़ा पर्वत पकवाया था। वन से आए हुए आदमी ने उसके सामने खड़े होकर खाना शुरू किया और एक दिन में सारा का सारा पर्वत ग़ायब हो गया। बुद्धू ने तीसरी बार अपनी स्त्री की माँग की,
 किन्तु राजा ने एक बार और टालमटोल की और एक जहाज़

की माँग की जो ज़मीन और पानी पर चल सके। "जब भी तुम उस पर सवार होकर आओगे", वह बोला, "तुम उसी समय मेरी कन्या को स्त्री-रूप में पा जाओगे।"

बुद्धू सीधा वन में गया। वहाँ वही सन-सफ़ेद छोटा-सा बूढ़ा मनुष्य बैठा था, जिसे उसने अपना केक दिया था। वह आदमी बोला, मैंने तेरे लिये पिया और खाया है और मैं तुझे जहाज़ भी दूँगा। मैं सब कुछ करूँगा क्योंकि तूने मेरे प्रति दया दिखाई है।"

तभी उसने उसे इच्छित जहाज़ दे दिया और राजा ने जब वह देखा तो वह अपनी कन्या को उससे और अधिक नहीं रोक सका। ब्याह रचा गया और राजा की मृत्यु के बाद बुद्धू ने विरासत में राज्य पाया और बहुत दिनों तक वह अपनी स्त्री के साथ सुख-पूर्वक रहा।

तीन सोने के बालों वाला शैतान

एक निर्धन स्त्री थी। उसके एक पुत्र पैदा हुआ। पैदा होने के समय उसमें भाग्यवानों जैसे लक्षण थे, अतः उसके लिये भविष्यवाणी की गई कि चौदहवें वर्ष में राजा की कन्या के साथ उसका ब्याह होगा। अब ऐसा हुआ कि उसके कुछ समय बाद ही राजा गाँव में आया और किसी को मालूम नहीं हुआ कि वह राजा है। और जब उसने लोगों से पूछा कि कोई नई बात बताओ तो उन्होंने उत्तर दिया, "इन दिनों एक बच्चा पैदा हुआ है जिसमें भाग्यवानों जैसे लक्षण हैं। ऐसे लक्षणों वाला जिस काम में भी हाथ डालता है उसमें भाग्य सदा ही उसका साथ देता है। उसके लिये यह भविष्यवाणी भी की गई है कि वह अपने चौदहवें वर्ष में राजा की कन्या के साथ ब्याहा जाएगा।"

राजा का मन पापी था। उसे इस भविष्यवाणी पर क्रोध आ रहा था। वह बच्चे के माता-पिता के पास पहुँचा और मैत्री का दिखावा करते हुए बोला, "हे निर्धन लोगो, मुझे अपना बच्चा दे दो, मैं इसका पालन-पोषण करूँगा।" पहले तो वे मना करते रहे, किन्तु जब उस परदेसी ने उसके बदले में भारी सोना

 प्रस्तुत किया तो वे सोचने लगे, 'यह भाग्यवान बच्चा है और

निश्चय ही सब तरह से फले फूलेगा।' ° अंत में वे सहमत हो गए और उन्होंने बच्चा उसे दे दिया।

राजा ने उसे एक बक्स में लिटा दिया और उसे लेकर घोड़े पर सवार हो आगे चल दिया। चलते-चलते वह एक गहरी नदी पर पहुँचा। वहाँ उसने वह बक्स पानी में फेंक दिया और सोचा, 'मैंने अपनी लड़की को इस अनचाहे प्रेमी से बचा लिया है।' किन्तु बक्स डूबा नहीं बल्कि नाव के समान तैरने लगा। इस प्रकार वह राजा की राजधानी से दो मील दूर तक तैरता गया, जहाँ एक पनचक्की थी। उसके हौज़ में वह अटक गया। सौभाग्य से वहाँ चक्की वाले का नौकर खड़ा था। उसने बक्स देखकर उसे एक आँकड़े से निकाला और समझा कि एक बड़ा ख़ज़ाना पा गया। किंतु ज्यों ही उसने उसे खोला, उसमें लेटा मिला एक सुन्दर बच्चा, जो बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न था। वह उसे अपने मालिक के घर ले गया। उसके कोई बच्चा नहीं था सो पति-पत्नी दोनों को बहुत प्रसन्नता हुई और वे बोले, "भगवान ने इसे हमको दिया है।" और वे उस अनाथ बच्चे का भली-भाँति पालन-पोषण करने लगे और वह सर्व-गुण-सम्पन्न बनता हुआ बढ़ने लगा।

संयोग की बात कि एक बार तूफ़ान आने पर राजा चक्की पर आया और मालिक से बोला कि क्या यह इतना बड़ा लड़का तुम्हारा पुत्र है? उसने उत्तर दिया, "नहीं, यह अनाथ

लड़का है, यह चौदह वर्ष पूर्व एक बक्स में बन्द हौज में तैर रहा था और मेरे नौकर ने इसे पानी में से निकाला था।" इस पर राजा भांप गया कि यह उसी भाग्यवान बच्चे के अतिरिक्त और कोई नहीं है, जिसे मैंने पानी में फेंका था।

राजा बोला, "भले लोगो! क्या यह लड़का रानी के पास एक पत्र नहीं पहुँचा सकता? मैं इसे इनाम के तौर पर दो मोहरें दूंगा।"

"जो महाराज की आज्ञा", चक्की वालों ने उत्तर दिया और लड़के को तैयार होने को कहा।

राजा ने रानी के नाम एक पत्र दिया, जिसमें लिखा था, "जैसे ही यह लड़का इस पत्र को लेकर पहुँचे उसे मरवाकर गड़वा दिया जाए, और यह सब मेरे आने से पहले हो जाना चाहिये।"

लड़का पत्र लेकर रवाना हुआ। किन्तु वह मार्ग भूल गया और शाम को एक बड़े वन में पहुँचा। अँधेरे में उसने एक धीमी रोशनी देखी। वह उधर गया और एक छोटे-से मकान पर पहुँचा। जब वह भीतर घुसा तो वहाँ एक बुढ़िया आग के पास बिल्कुल अकेली बैठी थी। जब उसने लड़के को देखा तो वह सहम गई और बोली, "तू कहाँ से आया है, और कहाँ जाएगा?" उसने
 उत्तर दिया, "मैं चक्की पर से आ रहा हूँ और रानी साहिबा

के पास पत्र पहुँचाने जा रहा हूँ। अब क्योंकि मैं वन में भटक गया हूँ सो मेरी तो यहाँ रात बिताने की इच्छा थी।"

स्त्री बोली, "अरे अभागे लड़के, तू डाकुओं के मकान में आ गया है, और जब वे घर आएँगे, तो तुझे मार डालेंगे।" लड़के ने कहा, "जो आता है आवे, मैं डरता नहीं।"

वह एक बेंच पर पड़कर सो गया। उसके फ़ौरन बाद ही डाकू आए और क्रोध में भरकर पूछने लगे कि यह कौन अनजान लड़का यहाँ पड़ा हुआ है। बुढ़िया बोली, "यह एक निर्दोष बच्चा है, वन में भटक गया है, और मैंने तरस खाकर इसे रख लिया है; इसे रानी साहिबा के पास एक पत्र ले जाना है।" डाकुओं ने पत्र खोल लिया और उसे पढ़ा। उसमें लिखा था कि यह लड़का वहाँ पहुँचते ही फ़ौरन मार डाला जाए। इस पर तो उन कठोर हृदय डाकुओं को दया आ गई। सरदार ने वह पत्र फाड़कर एक और पत्र लिखा। उसमें लिखा था कि जैसे ही यह लड़का वहाँ पहुँचे, उसका फ़ौरन राजकुमारी के साथ विवाह कर दिया जाए। उन्होंने उसे आराम से दूसरे दिन सुबह तक बेंच पर पड़ा रहने दिया, और जब वह जागा तो उन्होंने उसे पत्र दे दिया और सही रास्ता बता दिया।

जब रानी ने वह पत्र पाया और पढ़ा तो उसने वही किया, जो उसमें लिखा था। उसने विवाह में एक उत्तम भोज का

आयोजन किया और राजकुमारी का विवाह भाग्यवान लड़के के साथ कर दिया गया। युवक के सुन्दर और सुशील होने के कारण राजकुमारी उसके साथ सुख और आनन्द से रहने लगी।

कुछ समय बाद राजा अपने महल में वापिस आया और उसने देखा कि भविष्यवाणी पूरी हो गई है और वह भाग्यवान लड़का उसकी लड़की के साथ ब्याह दिया गया है। वह बोला, "यह सब कैसे हुआ? मैंने तो अपने पत्र में बिल्कुल दूसरी ही आज्ञा दी थी।"

इस पर रानी ने उसे वह पत्र दिया और कहा कि आप स्वयं देख लीजिये कि इसमें क्या लिखा है। राजा ने पत्र पढ़ा और उसने यह पाया ही कि वह एक दूसरे पत्र से बदल गया है। उसने लड़के से पूछा, कि तुझे सौंपे गये पत्र का क्या हुआ और तू क्यों उसकी जगह पर एक दूसरा पत्र ले आया। उसने उत्तर दिया, "मुझे कुछ नहीं मालूम, यह निश्चय ही रात को, जब मैं वन में सो रहा था, बदल दिया गया होगा।"

राजा ने क्रोध में कहा, "यह तेरे लिये इतना आसान नहीं होगा। जो मेरी लड़की को पाना चाहता है, उसे मेरे लिये नरक-लोक से शैतान के सिर के तीन सोने के बाल लाने पड़ेंगे। जो
 मैं चाहता हूँ, यदि तू वह मुझे ला दे, तो तू मेरी लड़की को रख

लेना ।" इससे राजा ने उससे सदा के लिये छुटकारा पाने की आशा की थी ।

भाग्यवान लड़का बोला, "सोने के बाल मैं निश्चय ही ला दूंगा । मैं शैतान से नही डरता ।" इसके बाद उसने विदा ली और अपनी यात्रा शुरू की ।

मार्ग पर चलते-चलते वह एक बड़े नगर में जा पहुँचा । वहाँ द्वार पर खड़े चौकीदार ने उससे पूछा कि तुम में क्या हुनर है और क्या जानते हो ।

भाग्यवान लड़के ने उत्तर दिया, "मैं सब कुछ ज्ञानता हूँ ।"

"तब तो तुम हम पर एक कृपा कर सकते हो", चौकीदार बोला, "हमारे चौक बाज़ार में एक कुआँ है । उसमें से पहले शराब निकलती थी, अब वह सूख गया है और उसमें से पानी भी नहीं निकलता । क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या कारण है ?" उसने उत्तर दिया, "यह तुम्हें मालूम हो जाएगा, केवल मेरे लौटने तक प्रतीक्षा करो ।"

वह आगे चला और एक दूसरे नगर में पहुँचा । वहाँ द्वारपाल ने वही प्रश्न किया । उसने उत्तर दिया । "मैं सब कुछ जानता हूँ ।" "तब तो तुम हम पर एक कृपा कर सकते हो और हमें बता सकते हो कि हमारे नगर के सोने के सेब देने वाले वृक्ष में अब पत्तियाँ भी नहीं आतीं, ऐसा क्यों ?" उसने उत्तर दिया,

"यह तुम्हें मालूम हो जाएगा, केवल मेरे लौटने तक प्रतीक्षा करो।"

वह आगे चला और एक बड़ी नदी पर पहुँचा, जिसे पार करना उसके लिये आवश्यक था। नाविक ने उससे पूछा कि तुम में क्या हुनर है और क्या जानते हो? उसने उत्तर दिया, "मैं सब कुछ जानता हूँ।" "तब तो तुम मुझ पर एक कृपा कर सकते हो", नाविक बोला, "और मुझे बता सकते हो कि मुझे सदा इधर और उधर नाव क्यों खेनी पड़ती है, और कभी छुट्टी नहीं मिलती।" उसने उत्तर दिया, "यह तुम्हें मालूम हो जाएगा, केवल मेरे लौटने तक प्रतीक्षा करो।"

जब वह नदी पार हो गया तो उसे नरक का द्वार मिला। उसके भीतर अँधेरा और कालिख थी, और शैतान घर पर नहीं था, किन्तु उसकी दादी एक चौड़ी आरामकुर्सी पर बैठी हुई थी। "तू क्या चाहता है?" वह उससे बोली, किन्तु वह बिल्कुल भी नाराज़ नहीं दीख रही थी। उसने उत्तर दिया, "मुझे शैतान के सिर के तीन सोने के बाल पाकर बहुत प्रसन्नता होगी, नहीं तो मैं अपनी स्त्री को नहीं रख सकता।" वह बोली, "यह तो बहुत कठिन है, जब शैतान घर आएगा और तुझे देखेगा, तो तुझे जान से हाथ धोना पड़ेगा। ख़ैर, मैं तो तेरी सहायता करूँगी।" उसने उसे चींटी बना दिया और कहा, "मेरे कोट की सिलवटों में घुस जा, वहाँ तू सुरक्षित रहेगा।"

"अच्छा", उसने उत्तर दिया, "यह निस्संदेह ठीक रहा, किन्तु मैं तीन बातें और जानना चाहूँगा : शराब देने वाला एक कुआँ क्यों सूख गया है और अब उससे पानी भी नहीं निकलता; एक वृक्ष जिस पर पहले सोने के सेब लगते थे, अब क्यों पत्तियाँ भी नहीं देता; एक नाविक को क्यों इस पार और उस पार खेते रहना पड़ता है और कभी छुट्टी नहीं मिलती ?" दादी ने उत्तर दिया, "ये प्रश्न कठिन हैं, किन्तु तू बस चुप और शांत रहना और ध्यान रखना कि जब शैतान के तीन सोने के बाल उखाड़ूँ तो वह क्या कहता है।"

जब शाम हुई तो शैतान घर आया। वह अभी भीतर घुसा ही था कि भाँप गया कि वायु स्वच्छ नहीं है। उसने कहा, "मुझे नर-मांस, नर-मांस की गंध आ रही है, यहाँ का मामला ठीक नहीं है।" और तब उसने सब कोनों में झाँका और ढूँढ़ा, किन्तु उसे कुछ नहीं मिला। दादी उसे डाँटने लगी। वह बोली, अभी-अभी तो झाड़ू लगाई गई है, और सब क़रीने से रखा गया है, अब तू फिर सब फेंके दे रहा है, तेरी नाक में सदा ही नर-मांस घुसा रहता है। बैठ जा और खाना खा ले।"

शैतान थका हुआ था और जब वह खा-पी चुका तो उसने दादी की गोद में अपना सिर रख दिया और कहा कि ज़रा मेरे जूँ निकाल दे। थोड़े ही समय बाद वह सो गया और फुफकारने व ख़र्राटे भरने लगा। तभी बुढ़िया ने सोने का एक बाल पकड़-

कर उखाड़ा और अपने पास रख लिया।

"आह !" शैतान चीख़ उठा, "तेरे जी में क्या है ?"

दादी ने उत्तर दिया, "मैंने एक अटपटा स्वप्न देखा है, और चौंककर मैंने तेरे बाल पकड़ लिये।"

शैतान ने पूछा, "तूने क्या स्वप्न देखा है ?"

"मैंने देखा है कि चौक-बाज़ार का एक कुआँ है, जिससे कभी शराब निकलती थी। वह सूख गया है और अब उससे पानी भी नहीं निकलता। इसका क्या कारण है ?"

शैतान ने उत्तर दिया, "ओह, काश उन्हें यह पता होता ! कुएँ में एक पत्थर के नीचे एक मेंढक बैठा हुआ है। यदि वे उसे मार दें तो सचमुच ही शराब फिर निकलने लगेगी।"

दादी फिर उसके जूँ निकालने लगी, यहाँ तक कि वह सो-कर ख़र्राटे भरने लगा, जिससे खिड़कियाँ हिल रही थीं। तभी उसने उसका दूसरा बाल उखाड़ा।

"हो ! तू क्या कर रही है ?" शैतान क्रोध में गरजा।

उसने उत्तर दिया, "बुरा मत मान, मैंने एक स्वप्न देखा है।"

 "तूने फिर क्या स्वप्न देखा ?" शैतान ने पूछा।

"मैंने देखा कि राज्य में एक वृक्ष लगा है, जिस पर कभी सोने के सेब लगते थे, उस पर अब पत्तियाँ भी नहीं आतीं। इसका भला क्या कारण है ?"

शैतान ने उत्तर दिया, "ओह, काश उन्हें यह पता होता ! उसकी जड़ एक चूहा कुतरता रहता है, यदि वे उसे मार दें, तो सचमुच उसमें फिर सोने के सेब लगने लगेंगे। लेकिन अपने स्वप्नों से मुझे बचा। यदि तू मुझे नींद में फिर तंग करेगी तो मैं तेरी कनपटी पर घूँसा जड़ दूँगा।"

दादी ने उसे तसल्ली दी और वह फिर उसके जूँ निकालने लगी, यहाँ तक कि वह सोकर ख़र्राटे भरने लगा। तभी उसने उसका तीसरा सोने का बाल पकड़कर उखाड़ लिया।

शैतान हवा में उछल पड़ा, गरजा और कुहराम मचाने को आमादा हो गया।

किन्तु दादी ने उसे फिर भी मना लिया और बोली, "बुरे स्वप्नों का कोई क्या करे ?"

"तो तूने भला क्या स्वप्न देखा ?" वह पूछने लगा। वह सचमुच उत्सुक हो उठा था।

 "मैंने एक नाविक देखा जो शिकायत कर रहा था कि मुझे

सदैव इस पार और उस पार खेते रहना पड़ता है, और मुझे छुट्टी नहीं मिलती। इसका क्या कारण है?"

शैतान ने उत्तर दिया, "ओह, वह मूर्ख! जब कोई आए और पार होना चाहे तो उसे डाँड़ उसके हाथ में दे देना चाहिये। तब दूसरे को पार उतारना पड़ेगा और वह छूट जाएगा।"

अब तक दादी ने उसके तीन सोने के बाल उखाड़ लिये थे और तीनों प्रश्नों का उत्तर दिया जा चुका था। इसलिये उसने उस दैत्य को आराम से पड़ा रहने दिया और वह दिन निकलने तक सोता रहा।

जब शैतान फिर बाहर गया तो बुढ़िया ने चींटी कोट की सिलवट से निकाली और भाग्यवान लड़के को उसका मनुष्य शरीर फिर दे दिया। वह बोली, "यह ले तीन सोने के बाल और शैतान ने तेरे तीनों प्रश्नों के उत्तर में जो कहा है, वह तो तूने सुन ही लिया होगा।"

"हाँ हाँ", उसने उत्तर दिया, "मैने वह सुन लिया है और उसे याद भी रखूँगा।"

वह बोली, "तो तेरा काम हो गया, और अब तू अपनी राह जा सकता है।" उसने बुढ़िया को संकट के समय सहायता देने के लिये धन्यवाद दिया और नरक-लोक छोड़ दिया।

जब वह नाविक के पास आया तो उसे वायदे के अनुसार उत्तर देना था। भाग्यवान् लड़का बोला, "पहले मुझे पार करो और तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें किस तरह छुट्टी मिलेगी।" और जब वह दूसरे किनारे पर पहुँच गया तो उसने उसे शैतान की बताई सलाह दी, "यदि फिर कोई आए और पार होना चाहे तो उसके हाथ में बस डाँड़ पकड़ा देना।"

वह आगे चला और उस नगर में आया जहाँ फलहीन वृक्ष खड़ा था। वहाँ भी पहरेदार उत्तर पाना चाहता था। सो उसने उससे वही बताया जो शैतान से सुना था, "उस चूहे को मार दो, जो उसकी जड़ कुतर रहा है। इस प्रकार उस पर फिर सोने के सेब लगने लगेंगे।" इस पर पहरेदार ने उसे धन्यवाद दिया और उसे इनाम के तौर पर सोने से लदे हुए दो गधे भेंट किये, जो उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

अन्त में वह उस नगर में पहुँचा जिसका कुआँ सूखा पड़ा था। सो उसने पहरेदार से वही बात कही, जो शैतान ने बताई थी, "कुएँ में एक पत्थर के नीचे एक मेंढक बैठा है, तुम्हें उसे ढूँढ़कर मार देना होगा। फिर उससे दुबारा बढ़िया शराब निकलने लगेगी।" पहरेदार ने उसे धन्यवाद दिया और उसे पहले के समान सोने से लदे दो गधे भेंट किये।

अन्त में भाग्यवान लड़का घर अपनी स्त्री के पास पहुँचा। जब उसने उसे फिर देखा और सुना कि किस प्रकार

उसके लिये सब संभव हो सका है तो उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई। राजा को उसने उसकी इच्छा के अनुसार शैतान के तीन सोने के बाल दिये, और जब उसने सोने समेत चार गधे देखे तब तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, "अब सब शर्तें पूरी हो चुकी हैं और तू मेरी लड़की को रख सकता है। किन्तु प्रिय बेटे! तू ज़रा यह तो बता कि यह इतना सारा सोना कहाँ से आया? यह तो बहुत बड़ा ख़ज़ाना है।"

उसने उत्तर दिया, "मैं एक नदी पार करके आया हूँ और वहाँ से मैं यह साथ लाया हूँ; यह वहाँ किनारे पर बालू की जगह पड़ा हुआ है।"

राजा बोला, "क्या मैं भी उसमें से ला सकता हूँ?" वह लालच में आ गया था।

"जितना आप चाहें", उसने उत्तर दिया, "नदी में एक नाविक रहता है। उससे कहकर पार उतर जाइये और आप अपने बोरे भर सकेंगे।"

लालची राजा बहुत तेज़ी से उस मार्ग पर गया और जब वह नदी पर पहुँचा तो उसने नाविक को संकेत किया कि वह उसे पार कर दे। नाविक आया और उसे नाव पर चढ़ने को कहा और जब वे दूसरे किनारे पर पहुँचे तो उसने उसके हाथ में डाँड़ थमा दिया और स्वयं वहाँ से कूद पड़ा।

श्रौर तब से राजा को श्रपने पापों के दंड-स्वरूप नाव खेनी पड़ी।

"क्या वह श्राज तक भी खेता रहता है ?"

"श्रौर नहीं तो क्या ? किसी ने उससे डाँड़ ही नहीं लिया।"

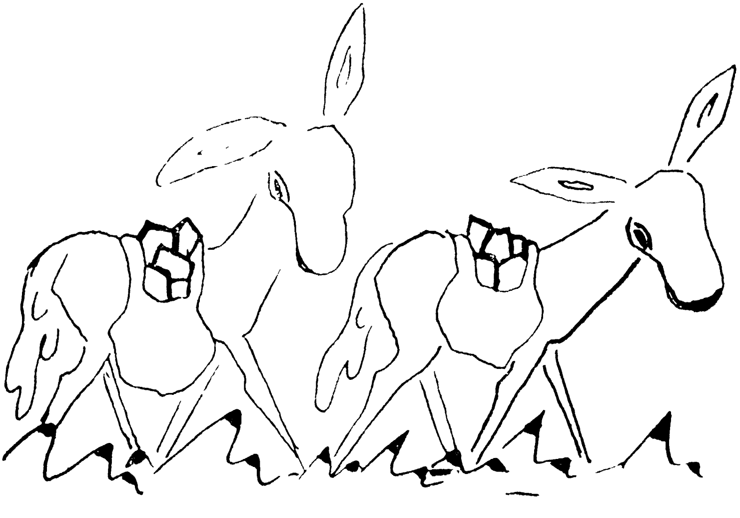

बहादुर दर्ज़ी

गर्मी में एक दिन सवेरे एक दर्ज़ी खिड़की से लगी एक मेज़ पर बैठा था। वह बहुत प्रसन्न था और बड़ी लगन से सिलाई कर रहा था। तभी एक किसान-स्त्री सड़क पर आई और उसने आवाज़ लगाई, "बढ़िया मुरब्बा ले लो, बढ़िया मुरब्बा !" यह आवाज़ दर्ज़ी के कानों को मीठी लगी। उसने अपना छोटा-सा सिर खिड़की के बाहर निकाला और आवाज़ दी, "ओ भली फेरी वाली, ऊपर आओ ! यहाँ तुम्हारा सौदा हो जाएगा।" वह स्त्री अपनी भारी टोकरी लिये तीन सीढ़ियाँ चढ़कर दर्ज़ी के पास पहुँची और उसे सारे बरतन खोलकर दिखाए। दर्ज़ी ने उन सब को ध्यान से देखा। वह उन्हें एक-एक करके ऊपर उठाता और नाक के पास ले जाता। अन्त में उसने कहा, "यह मुरब्बा अच्छा मालूम होता है। इसमें से मुझे सौ ग्राम तो तोल ही दो, और यदि यह सवा सौ ग्राम भी हो जाए तो भी मुझे इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता। उस स्त्री ने अच्छी बिक्री होने की आशा की थी। उसने दर्ज़ी को उसकी माँग के अनुसार दे तो दिया किन्तु वह बहुत क्रोध में भरकर बड़बड़ाती हुई वहाँ से निकली। दर्ज़ी कहने लगा, "भगवान की कृपा से यह मुरब्बा मुझे अच्छी तरह

से पच जाए और इससे मुझे शक्ति और बल मिले।" अलमारी से उसने डबलरोटी निकाली और एक बड़े टुकड़े पर मुरब्बा फैलाया। "इसका स्वाद बुरा नहीं रहेगा", उसने सोचा, "किन्तु इसे खाने के पहले मैं जर्सी तैयार कर लूँ।" सो उसने रोटी अपने पास रख ली और फिर से सिलाई में जुट गया। वह ख़ुशी में लम्बे-लम्बे टाँके लगाने लगा। इसी बीच मीठे मुरब्बे की सुगन्ध ऊपर दीवार तक पहुँच गई थी, जहाँ बड़ी संख्या में मक्खियाँ जमा थीं और वे ललचाकर झुंड का झुंड उस पर आ बैठीं। "अरे तुम्हें किसने दावत दी ?" दर्ज़ी ने कहते हुए बिना बुलाए मेहमानों को उड़ा दिया। किन्तु मक्खियों ने हार न मानी और फिर आ धमकीं। अब तो दर्ज़ी का, जैसा कि कहावत है, ख़ून खौल उठा। उसने अपनी कतरनों की ढेरी से एक टुकड़ा उठाया और, "ठहरो मैं तुम्हें मज़ा चखाता हूँ !" कहते हुए बेदर्दी से उन पर वार कर दिया। कपड़ा हटाकर उसने जो गिना तो सात से कम नहीं थीं, जो चारों खाने चित पड़ी थीं। वह आप ही आप बोला, "हूँ ! क्या तू इतना बहादुर है ?" और स्वयं अपनी वीरता पर आश्चर्य करने लगा, "यह तो सारे शहर को मालूम होना चाहिये।" और जल्दी-जल्दी उसने कपड़े का एक टुकड़ा काटा और उसे सीकर बड़े-बड़े अक्षरों में उस पर काढ़ा, "एक वार में सात !" वह बोला, "अरे शहर ही क्या, सारे संसार को यह मालूम होना चाहिये !" और उसका हृदय मेमने की पूँछ के समान हरकत करने लगा।

दर्जी ने वह पट्टा अपने पेट पर बाँध लिया। वह बाहर निकल जाना चाहता था, क्योंकि उसका ख़याल था कि दूकान बहादुरी दिखाने के लिये बहुत छोटी रहेगी। जाने के पहले उसने मकान में इधर-उधर नज़र डाली, कि कोई ऐसी चीज़ तो नहीं है, जिसे वह अपने साथ ले जा सके। किन्तु उसे एक बासी पनीर के टुकड़े के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला। उसे उसने जेब में रख लिया। दरवाज़े के सामने उसने एक पक्षी देखा जो झाड़ी में उलझ गया था। उसे भी पनीर के पास जेब में जाना पड़ा। अब उसने तेज़ी से रास्ता तय करना शुरू किया। हलका और फुर्तीला होने के कारण उसे बिल्कुल भी थकान महसूस नहीं हुई। उस मार्ग से वह एक पर्वत पर पहुँचा, और जब वह उसकी सबसे ऊँची चोटी पर जा पहुँचा तो वहाँ उसे एक लम्बा-चौड़ा दैत्य बैठा दिखाई दिया। वह बहुत इतमीनान से अपने चारों ओर देख रहा था। दर्ज़ी बेधड़क उसके पास पहुँच गया और उसे सम्बोधन करते हुए बोला, "नमस्ते, दोस्त! यही बात है न, कि तू यहाँ बैठा विशाल संसार को देख रहा है? मैं अभी-अभी बाहर निकला हूँ और अपने को परखना चाहता हूँ। क्या तेरी भी साथ चलने की इच्छा है?" दैत्य ने उसे घृणा से देखते हुए कहा, "अरे बदमाश! बदतमीज़! निकम्मे छोकरे!" दर्ज़ी ने उत्तर दिया, "अच्छा तो यह बात है।" तब उसने कोट के बटन खोले और दैत्य को वह बँधा हुआ पट्टा दिखाते हुए कहा, "ले, तू पढ़ ले कि मैं कैसा आदमी हूँ।" दैत्य ने पढ़ा, "एक वार

में सात", और समझा कि जिन्हें दर्ज़ी ने मारा है, वे मनुष्य रहे होंगे। और उसके हृदय में उस छोकरे के लिये थोड़ा आदर उपजा। तो भी उसने पहले उसकी परीक्षा लेनी चाही। उसने हाथ में एक पत्थर का टुकड़ा लिया और उसे ऐसा दबाया कि उसमें से पानी चू पड़ा। दैत्य बोला, "यदि तुझ में शक्ति है तो मुझे ऐसा करके दिखा।" दर्ज़ी ने कहा, "बस इतना ही? यह तो हम जैसे आदमियों के लिए खेल है।" यों कहकर उसने जेब में हाथ डालकर मुलायम पनीर निकाला और उसे दबाया, जिससे कि रस बाहर बहने लगा। उसने कहा, क्यों, यह और भी अच्छा रहा न?" दैत्य को सूझ न पड़ा कि वह क्या कहे। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि एक मनुष्य ऐसा कर सकता है। तब उसने एक पत्थर उठाया और उसे इतना ऊँचा फेंका कि कोई उसे आँखों से मुश्किल से ही देख सकता था। वह बोला, "चिड़िया के बच्चे, अब तू मुझे ऐसा करके दिखा।" "ख़ूब फेंका!" दर्ज़ी ने कहा, "किन्तु फिर भी पत्थर दुबारा पृथ्वी पर आकर गिरा है। मैं ऐसा फेंक कर दिखाऊँगा, जो वापिस ही न आएगा।" उसने जेब में हाथ डालकर पक्षी को बाहर निकाला और उसे हवा में फेंक दिया। अपनी स्वतंत्रता पर प्रसन्न पक्षी ऊपर उड़ता चला गया और फिर नहीं लौटा। "मित्र, तुझे यह काम कैसा लगा?" दर्ज़ी ने प्रश्न किया। दैत्य बोला, "तू ख़ूब फेंक लेता है। अच्छा, अब देखूँ, तू कुछ बोझा भी उठा सकता है या नहीं।" वह दर्ज़ी को एक

विशाल बलूत के वृक्ष के पास ले गया, जो भूमि पर गिरा पड़ा था, और उसे दिखाते हुए बोला, "यदि तू सचमुच शक्तिशाली है तो मुझे इस वृक्ष को उठा ले चलने में सहायता दे।" उस ठिगने ने उत्तर दिया, "ख़ुशी से। तू ख़ाली तना उठा ले, मैं शाखाएँ व टहनियाँ उठाकर ले चलूँगा, वैसे है यही सबसे भारी।" दैत्य ने तना कंधे पर उठा लिया, पर दर्ज़ी तो एक डाल पर बैठ गया। दैत्य मुड़कर देख तो सकता नहीं था, अतः उसे समूचे वृक्ष और दर्ज़ी को भी ढोना पड़ा। वह पीछे ख़ूब प्रसन्न और उल्लसित था और यह गीत गा रहा था, "दर्ज़ी तीन चढ़े घोड़ों पर फाटक से बाहर निकले", मानो वृक्ष का ढोना बच्चों का खेल हो। जब दैत्य उस भारी बोझ को मार्ग पर कुछ दूर ढो ले गया तो वह और आगे न चल सका और चिल्लाया, "सुन, अब मैं वृक्ष को गिराए बिना नहीं रह सकता।" दर्ज़ी नीचे कूद पड़ा। उसने वृक्ष को दोनों हाथों से पकड़ लिया, मानो उसने ही उसे ढोया हो। दैत्य से वह बोला, "तू इतना लम्बा-तड़ंगा है, मामूली पेड़ भी नहीं ढो सकता!"

दोनों साथ-साथ आगे बढ़े। जब वे एक चेरी के वृक्ष के पास से गुज़रे तो दैत्य ने वृक्ष की चोटी पकड़ी, जहाँ बिलकुल पके फल लटक रहे थे। उसने उसे झुकाया और दर्ज़ी के हाथ में पकड़ा कर फल खाने को कहा। दर्ज़ी तो इतना कमज़ोर था कि वृक्ष को थामे नहीं रख सकता था। अतः दैत्य के

छोड़ते ही वृक्ष की चोटी ऊपर चली गई और उसके साथ ही दर्ज़ी भी ऊपर पहुँच गया। जब वह फिर बिना चोट खाए नीचे गिरा तो दैत्य बोला "यह क्या ? तुझ में एक कमज़ोर टहनी को थामे रखने की भी शक्ति नहीं है ?" दर्ज़ी ने उत्तर दिया, "शक्ति की मुझ में कमी नहीं। क्या तू समझता है, यह उसके लिये कोई कठिन कार्य है, जो सात को एक वार में समाप्त कर चुका है ? मैंने वृक्ष के ऊपर छलाँग लगाई थी, क्योंकि शिकारी वहाँ नीचे झाड़ियों से गोली चला रहे थे। यदि तुझ में सामर्थ्य है, तो कूद।" दैत्य ने प्रयत्न किया, किन्तु वह वृक्ष के ऊपर न पहुँच सका और शाखाओं में ही अटक गया।

दैत्य ने उससे कहा, "यदि तू इतना ही बहादुर है तो फिर मेरे साथ हमारी गुफ़ा में चलकर हमारे साथ रात बिताना।" जब वह गुफ़ा में पहुँचे तो वहाँ और दैत्य भी आग के पास बैठे थे और सब ही हाथ में एक-एक भुनी हुई भेड़ लिये खा रहे थे। दर्ज़ी ने अपने चारों ओर देखा और सोचा, 'यह जगह तो मेरी दूकान से कहीं बड़ी है।'

दैत्य ने उसे एक पलंग दिखाकर कहा कि वह उस पर लेटकर ख़ूब सो ले। दर्ज़ी के लिये तो पलंग बहुत बड़ा था। वह उस पर लेटा नहीं, बल्कि कमरे के एक कोने में दुबक गया। जब आधी रात हुई तो दर्ज़ी को गहरी नींद सोया जानकर दैत्य उठा। उसने उठकर एक बड़ा लोहे का छड़ लिया और एक वार

में उसे पलंग में घुसेड़ दिया और सोचा कि उसने उस टिड्डे की जीवन-लीला समाप्त कर दी है। सुबह बहुत तड़के दैत्य जंगल में चले गए और दर्ज़ी को बिल्कुल भूल गए। तभी वह अचानक मस्त चाल से इठलाता हुआ उधर आया। इस पर तो दैत्य भयभीत हो गये और वहाँ से तेज़ी से भाग चले।

दर्ज़ी लगातार नाक की सीध में आगे चलता गया। काफ़ी दूर चल चुकने के बाद वह एक राजमहल के सहन में पहुँचा और थका हुआ होने के कारण घास पर लेटकर सो गया। जब वह वहाँ सो रहा था, लोग उसके पास आए। उन्होंने उसे चारों ओर से ग़ौर से देखा और पेट पर बँधे पट्टे को पढ़ा, "एक वार में सात।" वे कहने लगे, "ओह! यह शूरवीर यहाँ शान्ति के समय में क्या चाहता है? यह अवश्य ही कोई महारथी है।" वे वहाँ से चले गये और उन्होंने यह बात राजा से कही और यह सलाह दी कि यदि युद्ध छिड़ गया तो यह व्यक्ति ज़रूरी और काम का सिद्ध होगा। इसे किसी भी मूल्य पर छोड़ना उचित नहीं।

राजा को यह सलाह अच्छी लगी और उसने अपने दरबारियों में से एक को दर्ज़ी के पास यह कहकर भेज दिया कि जब वह जाग जाए तो वह उसे सेना में नौकरी करने को कहे। दूत सोने वाले के पास खड़ा रहा और जब तक प्रतीक्षा करता

 रहा जब तक कि उसने अँगड़ाई लेकर आँखें नहीं खोल दीं। उसके

जाग जाने पर उसने अपना प्रस्ताव रखा। दर्ज़ी ने उत्तर दिया, "ठीक, इसी लिये तो मैं यहाँ आया हूँ, मैं राजा के यहाँ नौकरी करने को तैयार हूँ।" इस पर उसका सम्मान के साथ स्वागत हुआ और उसे एक बढ़िया मकान रहने को मिला। किन्तु सैनिक लोग दर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो गये और वे यही मनाते रहते कि वह उनसे हज़ार मील दूर रहे। वे आपस में कहते, "इससे क्या बनेगा ? यदि हम इससे झगड़ा मोल लें और यह हमला कर बैठे तो हर वार में सात गिर जाएँगे। तब तो हम जैसों में से कोई नहीं बच सकता।" अतः उन्होंने एक तरकीब सोची। वे सब मिलकर राजा के पास गए और उन्होंने उससे विदा माँगते हुए कहा, "हम ऐसे आदमी के पास रहना सहन नहीं कर सकते जो एक वार में सात को गिराता है।"

राजा को दुःख हुआ कि उसे एक के लिये अपने सब स्वामिभक्त सैनिक खोने पड़ रहे हैं। दर्ज़ी से पीछा छुड़ाकर उसे प्रसन्नता होती, किन्तु उसे अलग करने की उसे हिम्मत न होती थी, क्योंकि राजा को भय था कि कहीं प्रजा समेत उसे मारकर दर्ज़ी स्वयं राजसिंहासन पर न बैठ जाए। उसने बहुत देर तक इधर-उधर की सोची और अन्त में उसे एक उपाय सूझा। उसने दर्ज़ी के पास आदमी भेजकर कहलवाया, "तुम तो बहुत ही बहादुर हो, मैं तुम से एक प्रस्ताव करना चाहता हूँ : मेरे देश के वन में दो दैत्य रहते हैं, जो लूट-मार, आग-पात द्वारा बहुत हानि पहुँचा

रहे हैं। कोई भी स्वयं को मृत्यु के मुख में डाले बिना उनके पास नहीं जा सकता। यदि तुम इन दोनों दैत्यों को हरा दो और मार डालो तो मैं अपनी इकलौती कन्या तुम्हें ब्याह दूंगा और दहेज में आधा राज्य दूंगा। सौ घुड़सवार भी तुम्हारे साथ जाएँगे और तुम्हें सहायता देंगे।" दर्ज़ी ने सोचा, यह काम मेरे जैसे आदमी के लिये ही है, एक सुन्दर राजकुमारी और आधा राज्य किसी को रोज़-रोज़ नहीं मिलते। "हाँ हाँ!" उसने उत्तर में कहा, "दैत्यों को मैं निश्चय ही क़ाबू में कर लूँगा और उसके लिये मुझे सौ सवारों की आवश्यकता नहीं है। जो एक वार में सात को गिरा देता है, वह दो से नहीं डरता।"

दर्ज़ी रवाना हो गया और सौ सवार उसके पीछे-पीछे चले। जब वह जंगल के पास पहुँचा तो उसने अपने साथियों से कहा, "तुम लोग यहीं ठहरे रहो, मैं अकेला ही दैत्यों से निबट लूँगा। तब वह झपटकर जंगल में घुस गया और अपने दायें-बायें देखता रहा। कुछ समय बाद उसने दोनों दैत्यों को देखा। वे एक वृक्ष के नीचे पड़े सो रहे थे और ऐसे ख़र्राटे भर रहे थे कि डालें ऊपर और नीचे हो रही थीं। दर्ज़ी सुस्त तो था नहीं। उसने दोनों जेबें पत्थरों से भर लीं और उन्हें लेकर वृक्ष पर चढ़ गया। जब वह आधी दूर चढ़ गया तो वह सोने

 वालों के ठीक ऊपर वाली एक डाल पर जाकर बैठ गया और

एक दैत्य की छाती पर एक के बाद एक पत्थर गिराने लगा। देर तक तो दैत्य को कुछ भी मालूम न पड़ा, किन्तु अन्त में वह जाग गया और अपने साथी को धक्का देकर बोला, "मुझे क्यों मार रहा है ?" "तू स्वप्न देख रहा है", दूसरा बोला, "मैं तुझे नहीं मार रहा !" वे फिर पड़कर सो गए और तब दर्जी ने एक पत्थर दूसरे के ऊपर फेंका। दूसरा चिल्लाया, "यह क्या ? तू मुझे क्यों मार रहा है ?" पहले ने उत्तर दिया, "मैं तो तुझे नहीं मार रहा", और बड़बड़ाने लगा। वे कुछ देर आपस में झगड़ते रहे, किन्तु थके होने के कारण उन्होंने इसकी परवाह न की और लड़-लड़ाकर फिर सो गए। दर्जी ने अपना खेल नए सिरे से आरम्भ किया। उसने सबसे बड़ा पत्थर ढूँढ़ निकाला और उसे पूरी शक्ति से पहले दैत्य की छाती पर दे मारा। "अब तो हद हो गई", चिल्लाता हुआ वह पागल के समान उछला और उसने अपने साथी को पेड़ पर दे मारा जिससे कि पेड़ हिल उठा। दूसरे ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया और वे इतने क्रोध में भर गए कि वृक्ष उखाड़कर एक दूसरे पर वार करने लगे, यहाँ तक कि अन्त में दोनों एक साथ मरकर भूमि पर गिर पड़े।

अब दर्जी नीचे कूद पड़ा। वह बोला, "सौभाग्य ही था कि उन्होंने यह वृक्ष नहीं उखाड़ा, जिस पर मैं बैठा था, नहीं तो मुझे गिलहरी के समान एक दूसरे पर फुदकना पड़ता।" उसने अपनी तलवार निकाली और हरेक की छाती में एक दो

गहरे घाव कर दिये। तब वह वन के बाहर घुड़सवारों के पास गया और बोला, "काम समाप्त हो गया। मैंने दोनों को यमपुर भेज दिया है किन्तु यह बहुत कठिन कार्य रहा। उन्होंने संकट आया देखकर वृक्ष उखाड़ डाले और अपनी रक्षा करने लगे, तो भी इस सबसे कुछ नहीं बना, जब मुझ जैसे से पाला पड़ा है।" घुड़सवारों ने पूछा, "तो क्या आप ज़ख्मी नहीं हुए ?" दर्ज़ी ने उत्तर दिया, "यह भी कोई बड़ा काम था ? वे मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सके।" घुड़सवार उस पर विश्वास करने को तैयार नहीं थे। वे जंगल में घुस गए। वहाँ उन्होंने दैत्यों को अपने ख़ून में तैरते देखा और उनके चारों ओर उखड़े हुए वृक्ष पड़े हुए थे।

दर्ज़ी ने राजा के वचनानुसार इनाम की माँग की। किन्तु उसे अपने वचन पर पछतावा हो रहा था और उसने नए सिरे से सोचा कि वह किस प्रकार इस बहादुर से छुटकारा पाए। वह उससे बोला, "इससे पहले कि तुम मेरी कन्या और आधा राज्य पाओ, तुम्हें एक और बहादुरी का काम पूरा करना होगा। जंगल में एक इकसिंगा घूमा करता है, जो बहुत नुक़सान कर रहा है। पहले तुम्हें उसको पकड़ना होगा।"

"एक इकसिंगे से तो मैं दो दैत्यों की अपेक्षा और भी कम डरता हूँ। एक वार में सात, यह है मेरा काम।"

 उसने एक रस्सा और एक कुल्हाड़ी लेकर जंगल का रास्ता

लिया श्रौर श्रपने सहायकों से बाहर ठहरने के लिए कहा। उसे श्रधिक देर ढूँढ़ना नहीं पड़ा। इकसिंगा शीघ्र ही उधर श्राया श्रौर सीधा दर्जी के ऊपर टूट पड़ा। मानो वह उसे बिना किसी झमेले के फाड़ डालना चाहता हो। "ज़रा धीरे-धीरे!" दर्ज़ी बोला, "इतनी तेज़ी से कुछ नहीं बनेगा।" वह खड़ा रहकर प्रतीक्षा करता रहा जब तक वह पशु बिल्कुल निकट नहीं श्रा गया। तब वह फुर्ती से उछलकर पेड़ के पीछे हो रहा। इकसिंगा भरपूर शक्ति से वृक्ष के ऊपर झपटा जिससे कि उसका सींग तने में इतना गहरा घुस गया कि उसमें इसे बाहर निकालने की शक्ति न रही। इस प्रकार वह पकड़ा गया। दर्ज़ी ने कहा, "श्रब मैंने चिड़िया फँसा ली।" उसने वृक्ष के पीछे से सामने श्राकर पहले इकसिंगे की गरदन में रस्सी बाँधी श्रौर तब कुल्हाड़ी से तना फाड़कर सींग वृक्ष के बाहर निकाला, श्रौर जब सब ठीक हो गया तो उसे राजा के सामने ला खड़ा किया।

राजा उसे श्रब भी वचनानुसार इनाम देना नहीं चाहता था। उसने तीसरी माँग की कि दर्ज़ी को उसे विवाह के पूर्व एक जंगली सुश्रर पकड़ कर देना होगा, जो वन में बहुत नुक़सान कर रहा है। शिकारी उसकी मदद करेंगे। दर्ज़ी बोला, "बहुत ख़ुशी से, यह तो बच्चों का खेल है।" शिकारियों को वह वन के भीतर साथ नहीं ले गया, श्रौर इससे वे ख़ुश ही हुए, क्योंकि

सुअर ने कई बार उनका इस प्रकार स्वागत किया था कि उनमें अब घात लगाने की कोई चाह नहीं रह गई थी। जब सुअर ने दर्ज़ी को देखा, तो वह मुँह से झाग गिराता और किटकिटाता हुआ उसकी ओर दौड़ा और उसने उसे ज़मीन पर पटक देना चाहा। किन्तु फुर्तीला बहादुर पास के एक गिरजे में कूद गया और फ़ौरन एक छलाँग में ही खिड़की के ऊपर से बाहर कूद आया। सुअर दर्ज़ी के पीछे भाग ही रहा था, कि वह घूमकर बाहर कूद आया और उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया। इस प्रकार वह क्रोधी पशु पकड़ा गया। वह इतना भारी था कि खिड़की से बाहर कूद जाना उसके बस की बात नहीं थी। अब दर्ज़ी ने शिकारियों को बुलाया। उन्होंने क़ैदी को अपनी आँखों से देखा। उधर वह वीर राजा के पास गया, जिसे अब अपना वचन पालन करना पड़ा। उसने उसे अपनी कन्या ब्याह दी और आधा राज्य सौंप दिया।

कुछ समय बाद युवती रानी ने रात में सुना कि किस प्रकार उसका पति स्वप्न में कह रहा है, "लड़के, मुझे जर्सी तैयार कर दे और पतलून मरम्मत कर दे, नहीं तो मैं तेरी कनपटी पर गज़ मारूँगा।" इस पर तो वह समझ गई कि यह युवक किस ख़ानदान का है। उसने अपने पिता से अपना दुखड़ा रोया और उससे प्रार्थना की कि वह उसे उस पति से छुड़ाए, जो सिवाय दर्ज़ी के और कोई नहीं है। राजा ने उसे धीरज

बँधाते हुए कहा, "आनेवाली रात में सोने का कमरा खुला रखना। मेरे नौकर बाहर खड़े रहेंगे और जब वह सो जाएगा तो वे भीतर घुसकर उसे बाँध लेंगे और एक जहाज़ पर पहुँचा आएँगे, जो उसे बहुत दूर ले जाएगा।" स्त्री इससे ख़ुश हुई, किन्तु राजा का शस्त्रवाहक, जिसने यह सब सुना था, अपने युवक स्वामी को बहुत चाहता था और उसने उसे इस पूरे जाल की सूचना दे दी। सुनकर दर्ज़ी बोला, "मैं इस मामले को ख़त्म कर दूँगा।"

रात्रि में वह नियत समय पर अपनी स्त्री के साथ पलंग पर लेट गया। जब स्त्री को विश्वास हो गया, कि वह सो गया है, तो वह उठी और द्वार खोलकर लेट गई, पर दर्ज़ी तो केवल सोने का दिखावा कर रहा था। उसने स्पष्ट आवाज़ में बोलना शुरू किया, "लड़के, मुझे जर्सी तैयार करदे और पतलून मरम्मत कर दे, नहीं तो मैं तेरी कनपटी पर गज़ मारूँगा। मैंने एक वार में सात को सुला दिया, दो दैत्यों को मारा, इकसिंगे को खींच ले आया, और एक सुअर क़ैद किया और अब क्या मुझे उनसे डरना होगा जो बाहर कमरे के सामने खड़े हैं?" जब इन लोगों ने दर्ज़ी को इस प्रकार बोलते सुना तो वे बड़े भयभीत हुए। वे डर के मारे वहाँ से भाग खड़े हुए, और इस प्रकार दर्ज़ी राजा बना और जीवन भर राजा ही रहा।

धर्म-पिता यमराज

एक निर्धन आदमी के बारह सन्तानें थीं। उसे दिन-रात काम करना पड़ता, जिससे वह उन्हें रोटी भर दे पाता। अब जब तेरहवीं उत्पन्न हो गई तो अपनी मुसीबत में उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। वह दौड़कर बड़ी सड़क पर गया और उसका इरादा था कि पहला आदमी, जो उसे वहाँ मिले, उससे उसका धर्म-पिता बनने की प्रार्थना करे।

सबसे पहले उसे भगवान ही मिले। उन्हें पहले से ही पता था कि उसके मन में क्या है। वह उससे बोले, "निर्धन मनुष्य, मुझे तुझ पर दया आती है। मैं तेरे बच्चे का धर्म-पिता बनूँगा और उसकी देख-रेख करूँगा और संसार में उसे सुखी बनाऊँगा।"

उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

"मैं भगवान हूँ।"

उस व्यक्ति ने कहा, "तो मैं तुमसे धर्म-पिता बनने को नहीं कहता। तुम अमीरों को तो देते हो और ग़रीबों को भूखा मरने देते हो।" उसने ऐसा यों कहा, क्योंकि वह नहीं

जानता था कि भगवान कितनी बुद्धिमानी से सम्पत्ति ग्रौर निर्धनता का बँटवारा करते हैं। यह कहकर उसने उनकी ग्रोर से मुँह मोड़ा ग्रौर ग्रागे चला।

ग्रब शैतान उसके पास ग्राया ग्रौर बोला, "तू क्या ढूँढ़ रहा है ? यदि तू मुझे ग्रपने पुत्र का धर्म-पिता बनाना चाहेगा तो मैं उसे धन-धान ग्रौर संसार के सारे सुखों से भरपूर कर दूँगा।"

उसने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं शैतान हूँ।"

"तो मैं तुमसे धर्म-पिता बनने को नहीं कहता", वह ग्रादमी बोला, "तुम मनुष्यों को छलते ग्रौर कुमार्ग पर लगाते हो।"

वह ग्रागे चला। तभी पतली टाँगों वाला यमराज क़दम बढ़ाता हुग्रा उसके पास ग्राया ग्रौर बोला, "मुझे धर्म-पिता बना लो।"

उस व्यक्ति ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं यमराज हूँ, जो सबको बराबर कर देता हूँ।"

इस पर वह व्यक्ति बोला, "तुम ठीक रहोगे। तुम बिना किसी भेद-भाव के ग्रमीरों ग्रौर ग़रीबों को ले जाते हो। तुम ही धर्म-पिता बनोगे।"

यमराज ने कहा, "मैं तेरे पुत्र को धनवान और प्रसिद्ध बनाऊँगा, क्योंकि जो मुझे मित्र बनाता है उसे कोई कमी नहीं रह सकती।"

वह व्यक्ति बोला, "आगामी रविवार को नामकरण है, तभी तुम ठीक समय पर आ जाना।" यमराज अपने वचन के अनुसार नियत समय पर आ पहुँचा और यथाविधि धर्म-पिता बन गया।

जब लड़का बड़ा हुआ तो एक दिन उसका धर्म-पिता आया और उसे साथ चलने को कहा। उसने उसे बाहर वन में ले जाकर एक बूटी, जो वहाँ उगी हुई थी, दिखाई और कहा, "अभी तुझे नामकरण का उपहार मिलेगा। मैं तुझे एक प्रसिद्ध डाक्टर बनाऊँगा। जब तू किसी बीमार के पास बुलाया जाएगा, तो मैं हर बार तेरे सामने प्रकट होऊँगा। यदि मैं रोगी के सिरहाने खड़ा होऊँ तो तू विश्वासपूर्वक कह सकता है कि तू उसे चंगा कर देगा। और तब तू उसे यह बूटी खिला देना। इस प्रकार वह ठीक हो जाएगा। किन्तु यदि मैं रोगी के पायँते खड़ा होऊँ तो वह मेरा है और तुझे कह देना होगा कि कोई भी सहायता बेकार है। किन्तु ध्यान रहे कि तू यह बूटी मेरी इच्छा के विरुद्ध इस्तेमाल मत करना। इससे तू संकट में फँस जाएगा।"

बहुत समय नहीं बीता, कि युवक संसार का सबसे प्रसिद्ध डाक्टर बन गया। उसके विषय में कहा जाता, "उसे केवल रोगी

को देखने की आवश्यकता होती है और वह ठीक-ठीक जान लेता है कि उसकी क्या अवस्था है—वह चंगा हो जाएगा या मर जाएगा।" दूर-दूर से लोग वहाँ आते, उसे बीमार के पास ले जाते और उसे इतना अधिक धन देते कि वह शीघ्र ही धनी बन गया।

अब ऐसा हुआ कि उस देश का राजा बीमार पड़ा। डाक्टर को बुलवाया गया और उसे यह बताना था कि रोग-मुक्ति संभव है अथवा नहीं। किन्तु ज्यों ही वह पलंग के पास पहुँचा तो यमराज रोगी के पायँते खड़ा हुआ था, अतः उसके लिये कोई जड़ी-बूटी नहीं रह गई थी। डाक्टर ने सोचा, "यदि मैं एक बार भी यमराज के साथ धोखा करूँ तो वह निश्चय ही इसका बुरा मानेगा, किन्तु क्योंकि मै उसका धर्म-पुत्र हूँ तो वह अवश्य ही इस ओर से आँख मूँद लेगा। लाओ, करके ही देखूँ।" अतः उसने बीमार को पकड़ा और उसे उलटकर लिटा दिया, जिससे कि यमराज उसके सिरहाने हो गया। तब उसने उसे वह बूटी दी। राजा की दशा सुधरने लगी और वह स्वस्थ हो गया। अब यमराज डाक्टर के पास आया। उसने क्रोध में भरा हुआ और भयंकर मुख बना रखा था। उँगली उठाकर उसने धमकी दी और कहा, "तूने मेरे साथ छल किया है। इस बार तो मैं तुझे छोड़े देता हूँ, क्योंकि तू मेरा धर्म-पुत्र है, किन्तु यदि तूने फिर ऐसी धृष्टता की तो तुझे जान से हाथ धोना पड़ेगा और मैं तुझे ही ले जाऊँगा।"

इसके फ़ौरन बाद ही राजा की लड़की एक कठिन रोग का शिकार हो गई। वह उसकी इकलौती पुत्री थी। वह दिन-रात रोता रहता था, यहाँ तक कि उसकी आँखें अन्धी होने लगीं और उसने यह घोषणा करा दी कि जो उसे मृत्यु से बचा लेगा वह उसका पति बनेगा और राजमुकुट का उत्तराधिकारी होगा। जब डाक्टर बीमार के पलंग के पास आया तो उसने यमराज को उसके पायँते खड़ा देखा। उसे अपने धर्म-पिता की चेतावनी को याद रखना चाहिए था, किन्तु राजकुमारी की अनुपम सुन्दरता और उसका पति बनने का सौभाग्य, इनसे उसकी यहाँ तक मति मारी गई कि उसने सब विचारों को हवा में उड़ा दिया। उसने यह नहीं देखा कि यमराज क्रुद्ध दृष्टि से देख रहा है और हाथ को ऊपर उठाए पतले सूखे घूँसे से धमकी दे रहा है। उसने बीमार को उठाया और उसका सिर उस स्थान पर कर दिया जहाँ पहले पैर थे। तब उसने उसे बूटी दी और शीघ्र ही उसमें नए सिरे से जीवन आ गया।

उधर जब यमराज ने स्वयं को दूसरी बार अपने माल के लिये छले जाते देखा तो वह लम्बे डग भरता हुआ डाक्टर के पास पहुँचा और बोला, "तेरा काम समाप्त हुआ और अब तेरी बारी है।" उसने उसे अपने बर्फ़ से ठंडे हाथों से इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह प्रतिरोध न कर सका। यमराज उसे धरती के भीतर एक गुफ़ा में ले गया। वहाँ उसने देखा कि किस प्रकार

हज़ारों मोमबत्तियाँ असीम पंक्तियों में जल रही थीं, कुछ बड़ी, कुछ आधी, कुछ छोटी। प्रतिक्षण कुछ बुझ जातीं और दूसरी जलने लगतीं; मतलब यह है कि वह दीप-शिखायें एक लगातार सिलसिले में चलती दीखती थीं।

यमराज बोला, "तू देख रहा है! ये मनुष्यों के जीवन की मोमबत्तियाँ है। बड़ी बच्चों की है, आधी विवाहित मनुष्यों की है, जो अपने जीवन के सबसे सुन्दर समय में चल रहे है, छोटी बूढ़ों की है। किन्तु बच्चों और युवकों की भी अक्सर एक छोटी-सी मोमबत्ती होती है।"

डाक्टर ने कहा, "मुझे मेरे जीवन की मोमबत्ती दिखाइये।" वह समझता था कि वह काफ़ी बड़ी होगी। यमराज ने एक छोटे अंतिम सिरे की ओर संकेत किया, जो शीघ्र ही बुझने वाला था और कहा, "तू देख रहा है, यह है वह।" भयभीत डाक्टर ने कहा, "हे तात, मेरे धर्म-पिता, मेरी एक नई जला दीजिये, मुझ पर यह कृपा कर दीजिये, जिससे मैं सुन्दर राजकुमारी का पति और राजा बन जाऊँ।" यमराज ने उत्तर दिया, "ऐसा मै नहीं कर सकता। इसके पहले कि नई मोमबत्ती जले, एक का बुझ जाना आवश्यक है।" डाक्टर ने प्रार्थना की, "तो पुरानी मोमबत्ती एक नई के ऊपर लगा दीजिये जो उसके ख़त्म होने के साथ-साथ शुरू हो जाए।" यमराज ने इस प्रकार आचरण

 किया, मानो वह उसकी इच्छा पूरी करना चाहता हो। उसने

एक बड़ी-सी नई मोमबत्ती उठाई। किन्तु वह तो बदला लेना चाहता था, अतः वह जान-बूझकर उसे उलट कर लगाने में भूल कर बैठा, जिससे कि वह टुकड़ा उलटा गिर पड़ा और बुझ गया। तभी डाक्टर भी भूमि पर गिर पड़ा और इस प्रकार वह स्वयं मृत्यु के हाथ में चला गया।

भाई-बहन

नन्हे भाई ने अपनी नन्ही बहन का हाथ पकड़ा और कहा, "जब से माँ मरी, हमारा एक क्षण भी सुख से नहीं बीतता। सौतेली माँ हमें प्रतिदिन पीटती और ठोकरें मारती रहती है। रोटी के बचे-खुचे सूखे टुकड़े ही हमारा भोजन है। मेज़ के नीचे जो कुत्ता रहता है, वह हम से अधिक सुखी है। उसे कभी-कभी अच्छा टुकड़ा तो डाल देती है। काश, हमारी माँ को यह मालूम होता! आ, हम साथ-साथ दूर चले जाएँ।"

वे दिन भर चलते रहे और जब वर्षा होने लगी तो नन्ही बहन बोली, भगवान और हमारे हृदय साथ-साथ रो रहे हैं।" शाम को वे एक बड़े वन में पहुँचे। वे दुःख, भूख और लम्बी यात्रा के कारण इतने थक गए थे कि वे एक खोखले वृक्ष में घुसकर सो रहे।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब वे जागे, तो सूर्य आकाश में काफ़ी चढ़ आया था और उसकी किरणों ने वृक्ष के खोखले भाग में घुसकर वहाँ गर्मी पैदा कर दी थी। तभी भाई ने कहा, "बहन,

 मुझे प्यास लगी है। यदि मुझे किसी सोते का पता होता तो मैं

जाकर पानी पीता········ ·····लगता है कि मैंने पानी बहने का शब्द सुना है।"

भाई उठ खड़ा हुआ। उसने बहन का हाथ थामा और अब वे सोते की खोज में चल पड़े। किन्तु उधर दुष्ट सौतेली माँ एक जादूगरनी थी। उसने दोनों बच्चों को जाते हुए देख लिया था। वह छिपे-छिपे, जैसा कि जादूगरनियाँ किया करती हैं, उनका पीछा कर रही थी और उसने जंगल के सब सोतों पर जादू कर दिया था। जब उन्होंने एक सोता खोज निकाला, जो चमकता हुआ पत्थरों के ऊपर उछलता-सा बह रहा था तो भाई ने जल पीना चाहा। किन्तु बहन ने सुना कि किस प्रकार वह बहने की ध्वनि के साथ बोल रहा था, "जो मेरा जल पियेगा, वह शेर बन जाएगा।" वह चिल्लाई, "भैया, मैं तुझ से विनती करती हूँ, तू पानी मत पीना, अन्यथा तू जंगली पशु बन जाएगा और मुझे फाड़ डालेगा।"

भाई ने पानी नहीं पिया, यद्यपि उसे बड़े ज़ोर की प्यास लगी थी और उसने कहा, "मैं प्रतीक्षा करूँगा जब तक कि दूसरा सोता न मिल जाए।" जब वे दूसरे सोते पर पहुँचे तो बहन ने सुना कि वह भी यों बोल रहा था, "जो मेरा जल पियेगा, वह भेड़िया बन जाएगा; जो मेरा जल पियेगा, वह भेड़िया बन जाएगा।" वह चिल्लाई, "भैया मैं तुझ से विनती करती हूं, तू

पानी मत पीना, अन्यथा तू भेड़िया बन जाएगा और मुझे खा डालेगा ।"

भाई ने पानी नहीं पिया और बोला, "मैं प्रतीक्षा करूँगा, जब तक कि हम अगले सोते तक न पहुँच जाएँ, किन्तु तब मैं अवश्य ही पिऊँगा, जो तेरे जी में आए, कहा करना। मुझे बहुत ही जोर की प्यास लगी है।" और जब वे तीसरे सोते पर पहुँचे तो बहन ने सुना कि किस प्रकार वह बहने की ध्वनि के साथ कह रहा था, "जो मेरा जल पियेगा, वह हिरन बन जाएगा; जो मेरा जल पियेगा, वह हिरन बन जाएगा।" वह बोली, "ओ भैया, तू पानी मत पीना, अन्यथा तू हिरन बन जाएगा और मुझे छोड़कर भाग जाएगा।" किन्तु भाई फ़ौरन सोते के किनारे घुटने टेककर झुक गया और उसने पानी पी लिया, और ज्यों ही प्रथम बूंदें उसके ओठों पर पहुँचीं, वह हिरन का बच्चा बन गया।

अब बहन बेचारे शापित भाई के लिये रो रही थी और मृगछौना भी रो रहा था, जो शोक में डूबा उसके पास बैठा हुआ था। अन्त में बालिका बोली, "प्यारे मृगछौने, मैं निश्चय ही तुझसे कभी दूर न होऊँगी।" उसने अपने मोज़ों का सुनहला तस्मा खोला और उसे मृगछौने की गर्दन में बाँध दिया। तत्पश्चात् उसने एक प्रकार की घास उखाड़ी और उससे एक नरम डोरी बटी। वह उसमें उस छोटे पशु को बाँधकर साथ ले चली और वन में गहरे, और गहरे घुसती चली गई। और

काफ़ी देर तक चलते रहने के बाद वे एक छोटे मकान पर आए। बालिका ने भीतर झाँका। मकान ख़ाली था। सो उसने सोचा, 'यहाँ हम रह सकते हैं।' तब उसने मृगछौने के लिये पत्तियाँ और सेवार ढूंढ़कर एक नरम बिछौना तैयार कर दिया। प्रतिदिन प्रातःकाल वह बाहर जाती और खाने योग्य जड़ें, बेर और मेवा जमा करती, और मृगछौने के लिए लाती मुलायम-मुलायम घास। वह प्रसन्न रहती और उसके सामने इधर-उधर खेला करती। रात में जब नन्ही बहन थक जाती और प्रार्थना कर चुकती तो वह मृगछौने की पीठ को अपना तकिया बनाकर धीरे-धीरे सो जाती। यदि भाई का अपना रूप होता तो यह जीवन बहुत ही आनन्दमय होता।

वे वन में कुछ समय तक इस प्रकार अकेले रहे। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि उस देश के राजा ने वन में एक बड़े शिकार का आयोजन किया। वृक्षों के बीच से बिगुलों की आवाज़, कुत्तों का भोंकना और शिकारियों का शोर सुनाई दे रहा था। जब मृग-छौने ने यह सुना तो उसकी वहाँ जाने की बड़ी इच्छा हुई। उसने बहन से कहा, "ओह, मुझे शिकार में जाने दे, मुझ से अब रहा नहीं जाता।" ऐसा वह बार-बार कहता ही रहा, जब तक कि वह सहमत न हो गई। उसने मृगछौने से कहा, "किन्तु शाम तक मेरे पास अवश्य आ जाना। मैं निर्दयी शिकारियों से बचने के लिये अपना द्वार बन्द रखूँगी। वापिस आने पर तू द्वार खटखटाना

ग्रौर कहना, 'मेरी बहन, मुझे भीतर ग्राने दे', जिससे कि मैं तुझे पहचान लूँ, ग्रौर यदि तू ऐसा नहीं कहेगा तो मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगी।"

ग्रब मृगछौना कूदकर बाहर निकल गया। खुली हवा में उसे बहुत ग्रच्छा लगा ग्रौर बहुत ग्रानन्द ग्राया। राजा ग्रौर उसके शिकारियों ने सुन्दर पशु को देखा ग्रौर उसका पीछा किया, किन्तु वे उसे पकड़ न सके, ग्रौर जब उन्हें लगता कि उन्होंने उसे घेर लिया है तो वह झाड़ियों के ऊपर से कूदकर ग़ायब हो जाता। ग्रँधेरा होने पर वह घर की ग्रोर भागा। वहाँ पहुँचकर उसने द्वार खटखटाया ग्रौर ग्रवाज़ दी, "मेरी बहन, मुझे भीतर ग्राने दे।" तभी उसके लिये छोटा द्वार खुल गया। वह कूदकर भीतर चला गया, ग्रौर ग्रपने नरम बिस्तर पर उसने रात भर ग्राराम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल शिकार नए सिरे से ग्रारम्भ हुग्रा, ग्रौर जब मृगछौने ने दुबारा बिगुल की ग्रावाज़ ग्रौर शिकारियों की 'हो हो!' सुनी तो वह फिर बेचैन हो उठा ग्रौर बोला, "बहन, द्वार खोल दे। बाहर गए बिना मुझ से रहा नहीं जाएगा।" बहन ने द्वार खोलते हुए कहा, "किन्तु शाम को तुझे लौट ग्राना होगा ग्रौर ग्रपनी सांकेतिक भाषा बोलनी होगी।" जब राजा ग्रौर उसके शिकारियों ने सुनहला पट्टा पहने मृगशावक को फिर देखा तो सबने उसका पीछा किया, किन्तु वह उनके लिये बहुत तेज़ ग्रौर फुर्तीला निकला। यह दिन भर होता रहा, किन्तु

अन्त में शिकारियों ने उसे घेर लिया और एक ने उसे पैर में थोड़ा घायल कर दिया, जिस से वह लँगड़ाने लगा, पर धीमी चाल से भाग निकला। तभी एक शिकारी ने घर तक उसका पीछा किया और उसे यों पुकारते हुए सुना, 'मेरी बहन, मुझे भीतर आने दे।' और उसने देखा कि द्वार खुला और फ़ौरन ही बंद कर लिया गया। शिकारी ने राजा के पास आकर जो देखा सुना था, सब बता दिया। इस पर राजा ने कहा, "कल फिर शिकार होगा।"

बहन को यह देखकर भारी धक्का लगा कि उसका मृग-छौना घायल हो गया है। उसने उसका ख़ून धोया, घाव पर बूटी बाँधी और कहा, "प्यारे मृगछौने, अपने बिस्तर पर जा, जिससे तू फिर चंगा हो जाए।" किन्तु घाव इतना मामूली था कि सुबह मृगछौने को वह बिलकुल भी महसूस नहीं हो रहा था। और जब उसने फिर बाहर शिकार का कोलाहल सुना तो वह बोला, "मुझ से रहा नहीं जाता, मुझे वहाँ जाना ही चाहिए।" बहन रोने लगी और बोली, "अब की बार वे तुझे मार डालेंगे। मै यहाँ जंगल में अकेली हूँ और सारी दुनिया से दूर हो गई हूँ, मैं तुझे बाहर नहीं जाने दूँगी।" मृगशावक ने उत्तर दिया, "तो मैं दुःख से यहीं मर जाऊँगा। जब मैं बिगुल की आवाज सुनता हूँ तो मेरा मन होता है कि मैं नाचने लगूँ।" अब तो बहन के लिये कोई उपाय नहीं रह गया, उसने भारी

हृदय से द्वार खोल दिया और मृगशावक खुशी से कूदता-फाँदता जंगल में चला गया।

जब राजा ने उसे देखा तो उसने अपने शिकारियों से कहा, "आज दिन भर, रात होने तक इसका पीछा करो, किन्तु कोई इसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचावे।" ज्यों ही सूर्य डूबा, राजा शिकारी से बोला, "अब चलकर मुझे जंगल का मकान दिखा।" जब राजा मकान के सामने पहुँचा तो उसने खटखटाकर पुकारा, "प्रिय बहन, मुझे भीतर आने दे।" तुरन्त द्वार खुला और राजा भीतर घुस गया। वहाँ एक बालिका खड़ी थी, जो इतनी सुन्दर थी कि वैसी उसने पहले कभी न देखी थी। बालिका ने जब सिर पर सोने का मुकुट पहने हुए एक पुरुष को भीतर घुसते देखा तो वह भयभीत हो गई। किन्तु राजा ने उसे प्यार से देखा और उससे हाथ मिलाकर कहा, "क्या तुम मेरे साथ मेरे महल में चलना पसन्द करोगी और मेरी प्रिय पत्नी बनोगी?" बालिका ने उत्तर दिया, "ओ, हाँ! किन्तु मृगछौना भी साथ चलेगा; उसे मैं नहीं छोड़ूँगी।" राजा ने कहा, "वह तुम्हारे साथ रहेगा और उसे कोई कमी नहीं रहेगी।" इसी बीच मृगछौना कूदता हुआ आया। बहन ने उसे फिर डोरी से बाँध लिया और डोरी अपने हाथ में पकड़कर राजा के साथ घर से बाहर निकल चली।

राजा उस सुन्दर बालिका को घोड़े पर बिठाकर अपने महल में ले गया, जहाँ खूब ठाट-बाट के साथ उसका विवाह

हुआ और अब वह रानी बन गई। वे बहुत दिनों तक आनन्द-पूर्वक साथ रहे। मृगछौने का ख़ूब सावधानी से पालन-पोषण होता और वह महल के बाग़ में इधर-उधर चौकड़ी भरता फिरता।

उधर दुष्ट सौतेली माँ, जिसके कारण बच्चे बाहर निकल गए थे, यही समझती थी कि बहन को तो वन में जंगली जान-वरों ने फाड़ डाला होगा और मृगशावक के रूप में भाई को शिकारियों ने मार डाला होगा। अब जब उसने सुना कि वे इतने सुखी हैं और आनन्द से रह रहे हैं तो उसके मन में ईर्ष्या और द्वेष उपजा। जब तक कि वह फिर से दोनों को मुसीबत में न डाल दे, उसे चैन कहाँ! उसकी अपनी बेटी ने, जो रात्रि के समान कुरूप थी, और जिसके एक ही आँख थी, उसे बहुत खोटी खरी सुनाई और कहा, "एक रानी बनना, इस भाग्य की अधिकारिणी तो हूँ मैं।" बूढ़ी ने कहा, "शान्त तो रह!" और ख़ुशी में भरकर बोली, "जब समय आएगा मैं निश्चय ही सहायता के लिये तत्पर रहूँगी।"

अब समय आने पर रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। उस समय राजा शिकार के लिये गया हुआ था। बूढ़ी जादूगरनी ने बाँदी का रूप धारण किया और जिस कमरे में रानी लेटी हुई थी उसमें घुसकर प्रसूता से बोली, "आइये, स्नान का प्रबन्ध हो चुका है; उससे आपको लाभ होगा और

नूतन शक्ति प्राप्त होगी। शीघ्रता कीजिये, नहीं तो पानी ठंडा हो जाएगा।" उसकी लड़की भी वहीं मौजूद थी। उन्होंने शक्तिहीन रानी को स्नानगृह में लेजाकर टब में बिठा दिया। तब दरवाज़े बन्द करके वहाँ से भाग आईं। स्नानगृह में उन्होंने नरक-जैसी भयंकर अग्नि जला रखी थी, जिससे कि सुन्दर नव-यौवना रानी शीघ्र ही घुटकर मर गई।

जब यह काम पूरा हो चुका तो बूढ़ी ने अपनी लड़की को लेकर उसके सिर पर टोपी उढ़ाई और उसे रानी के स्थान पर पलंग पर लिटा दिया। उसने उसे भी रानी का रूप और वेष दे दिया, केवल वह उसे फूटी हुई आँख दुबारा नहीं दे सकी। उसको उसी करवट लेटना पड़ा, जिधर आँख नहीं थी, जिससे कि राजा यह न देख सके। सायंकाल जब राजा महल में लौटा और उसने सुना कि उसके पुत्र पैदा हुआ है तो उसे हार्दिक आनन्द हुआ और उसने अपनी पत्नी के पलंग के निकट जाकर देखना चाहा कि वह कैसी है। तभी बूढ़ी जल्दी से बोल उठी, "भगवान के लिये पर्दे पड़े रहने दीजिये। रानी साहिबा को प्रकाश की ओर देखने की आज्ञा नहीं है, और उन्हें विश्राम करना आवश्यक है।" राजा वापिस चला गया और उसने यह नहीं जाना कि एक नक़ली रानी बिस्तर पर लेटी हुई है।

जब आधी रात हुई और सब सो गए, तो शिशु-गृह में पालने के पास बैठी धाय उस समय भी अकेली जाग रही थी।

उसने देखा कि द्वार खुला और असली रानी अन्दर घुसी। रानी ने बच्चे को पालने में से उठा लिया और उसे बाँहों पर लिटाकर दूध पिलाने लगी। तब उसने उसका नन्हा गद्दा झाड़कर उसे फिर लिटा दिया। वह मृगछौने को भी नहीं भूली और जिस कोने में वह लेटा था, उधर जाकर उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगी। इसके बाद वह द्वार से बाहर निकल गई। धाय ने प्रातःकाल पहरेदारों से पूछा कि क्या कोई रात्रि में महल में आया था। किन्तु उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, हमने तो किसी को नहीं देखा।" इस प्रकार वह अनेक रातों में आती रही, किन्तु कभी वहाँ एक शब्द भी न बोलती। धाय उसे हमेशा देखती, किन्तु उसे किसी से इस विषय में कहने की हिम्मत न होती।

जब इस प्रकार कुछ समय बीता तो रानी ने रात्रि में बोलना प्रारम्भ किया। उसने कहा :

क्या करता मेरा मृगछौना, क्या करता नन्हा शिशु मेरा ?
बस दो बार और आना है, फिर न लगेगा मेरा फेरा।

धाय ने उसे उत्तर नहीं दिया और जब वह फिर ग़ायब हो गई तो धाय राजा के पास गई और उससे सब हाल कह सुनाया। राजा बोला, "हे भगवान ! मैं कल रात बच्चे के पास बैठूँगा।" संध्या समय वह शिशु-गृह में गया। आधी रात के लगभग रानी
 प्रकट हुई और बोली :

क्या करता मेरा मृगछौना, क्या करता नन्हा शिशु मेरा ?
एक बार आना बाक़ी है, फिर न लगेगा मेरा फेरा।

और हमेशा की तरह उसने ग़ायब होने से पहले बच्चे को दूध पिलाया। राजा को उससे बोलने का साहस न हुआ, किन्तु वह दूसरी रात में जागा। वह फिर बोली :

क्या करता मेरा मृगछौना, क्या करता नन्हा शिशु मेरा ?
बस यह अंतिम भेंट हमारी, फिर न लगेगा मेरा फेरा।

अब राजा से न रहा गया। वह उसकी ओर लपका और बोला, "तुम मेरी प्रिय पत्नी के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकती।" इस पर उसने उत्तर दिया, "हाँ, मैं आपकी पत्नी हूँ।"

भगवान की कृपा से उसे उसी क्षण दुबारा जीवन मिल गया। वह फुर्तीली सुर्ख़ और स्वस्थ दीख रही थी। इसके पश्चात् उसने राजा से अत्याचार का वर्णन किया, जो दुष्ट जादूगरनी व उसकी लड़की ने उस पर किया था। राजा ने दोनों को न्यायालय में बुलवाया और उनके लिये दंड घोषित हुआ। लड़की जंगल में भेजी गई, जहाँ उसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला। जादूगरनी को आग में डाला गया और वह भयंकर पीड़ा में जलकर मरी। और ज्यों ही वह जलकर राख हुई, मृगछौने का रूप बदल गया। उसने दुबारा अपना मनुष्य शरीर पा लिया और बहन-भाई अन्त समय तक साथ-साथ सुखपूर्वक रहे।

क्रम

					पृष्ठ
१. श्रीमती हॉल	...	..	..		१
२. हिमशुभ्रा	...	...	..		९
३. हैंज़ल व ग्रेटल	...	...	...		२८
४. सुनहली मुर्ग़ाबी	...	...	...		४४
५. तीन सोने के बालों वाला शैतान			..		५५
६. बहादुर दर्ज़ी	..	...	...		७०
७. धर्म-पिता यमराज		..	...		८८
८. भाई-बहन	...	...	...		९५

के लिये उसे अकेले समाप्त करना असंभव हो गया था। कोश का प्रथम खण्ड १८५४ में और द्वितीय ठीक एक शताब्दी पश्चात् १९५४ में प्रकाशित हुआ।

विल्हैल्म, जिसकी मृत्यु १६ दिसम्बर १८५९ को हुई, जीवन के अंत तक साहित्यिक अध्ययनार्थी, इतिहासकार व समालोचक रहा और अपने भाई के कथनानुसार उसे सर्वत्र लोक-कथाओं का संग्रह करना सबसे अधिक प्यारा था। जब कि याकोब व्याकरण संबंधी समस्याओं और जर्मन भाषा के इतिहास में व्यस्त रहता था, विल्हैल्म ने जर्मन वीर उपाख्यानों पर कार्य चालू रखा। वह बच्चों के खेल, रीति-रिवाजों व परियों पर बहुत सुन्दर लिखता था। याकोब ने विवाह नहीं किया, विल्हैल्म पति भी था और पिता भी।

अपने भाई की मृत्यु के छः मास पश्चात् विज्ञान अकादमी में स्मारक संभाषण में याकोब ने अपने विषय में कहा था, कि मैंने अपनी युवावस्था में कार्य के प्रति लौह-निष्ठा पाई थी, जिससे कि विल्हैल्म को उसके अपेक्षाकृत क्षीण स्वास्थ्य ने वंचित कर दिया था, किंतु विल्हैल्म की कृतियाँ रजत-द्युति के साथ फूटती थीं, जो कि मेरी अपनी रचनाओं में नहीं आ पाया। याकोब ने मृत्यु पर्यन्त अपना कार्य चालू रखा और २० सितम्बर १८६३ को उसकी अकस्मात् मृत्यु हो गई।

मक्स म्युल्लर भवन के लिये यह हर्ष का विषय है कि उसने ग्रिम बन्धुओं द्वारा संग्रहीत लोक-कथाओं का मूल जर्मन से किया गया अनुवाद प्रस्तुत करके जर्मन साहित्य का एक अत्यल्प किंतु महत्वपूर्ण अंश हिन्दी-जगत् को दिया है।

—हाइमो राउ